धींधवाल पब्लिकेशन
DHP-63

राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर द्वारा आयोजित

2nd ग्रेड (द्वितीय श्रेणी अध्यापक)

समाजशास्त्र

Sociology

सामाजिक विज्ञान (S.St.)

अध्यायवार वस्तुनिष्ठ प्रश्नों सहित

20 दिसम्बर 2024 को जारी नवीनतम पाठ्यक्रम के अनुसार

:: मार्गदर्शकगण ::

होशियार सिंह
(उप निरीक्षक राज. पुलिस)

डॉ. मंगल यादव
(Assistant Professor चयनित)

धींधवाल पब्लिकेशन

परीक्षा में सफलता हेतु इन पुस्तकों का अध्ययन करें

हमारे प्रकाशन की अन्य पुस्तकें

धींधवाल पब्लिकेशन

बी-22, वैष्णो विहार, बीकानेर मोबाइल : 8306733800

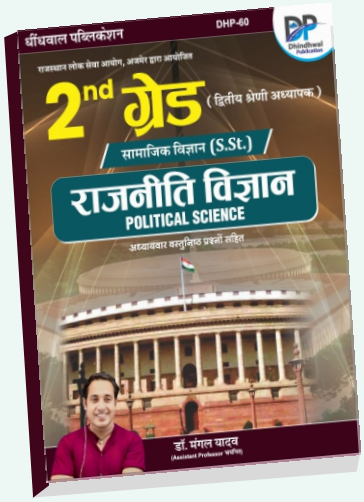

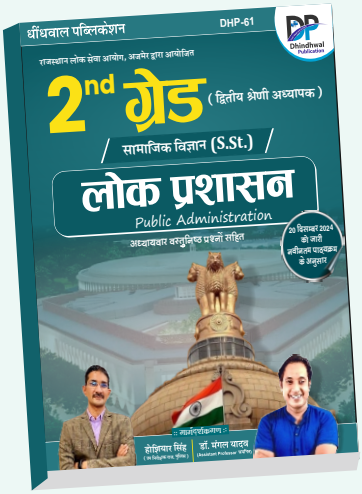

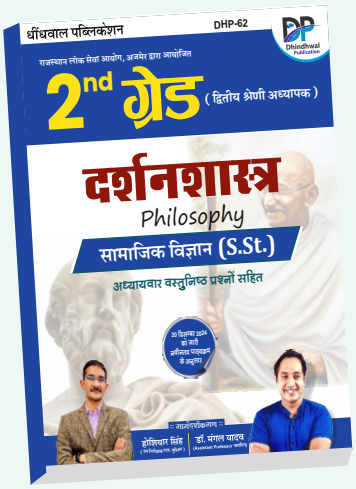

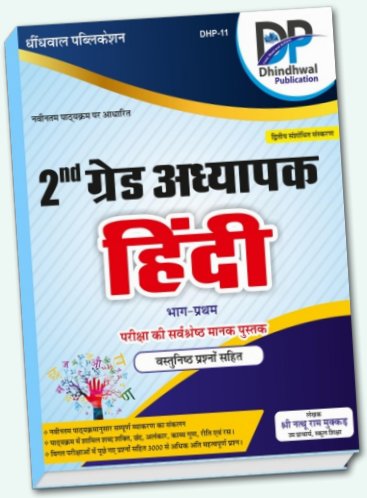

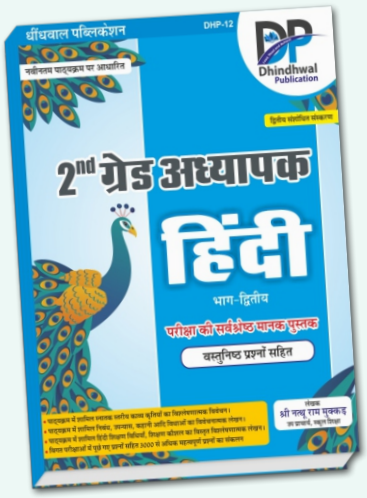

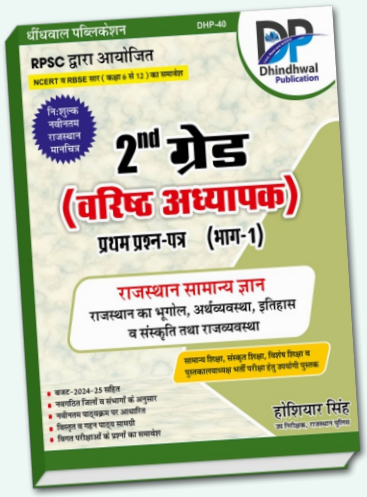

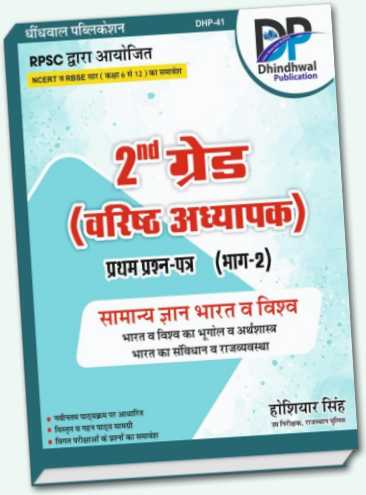

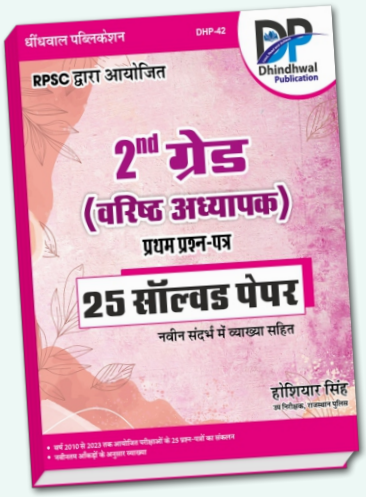

परीक्षा में सफलता हेतु इन पुस्तकों का अध्ययन करें

हमारे प्रकाशन की अन्य पुस्तकें

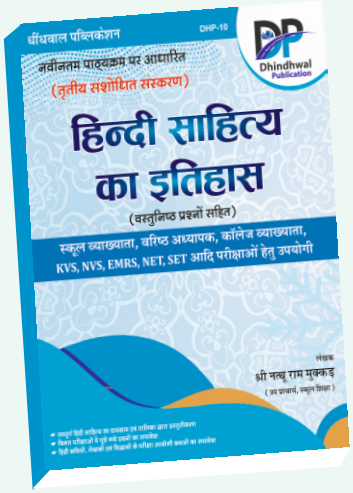

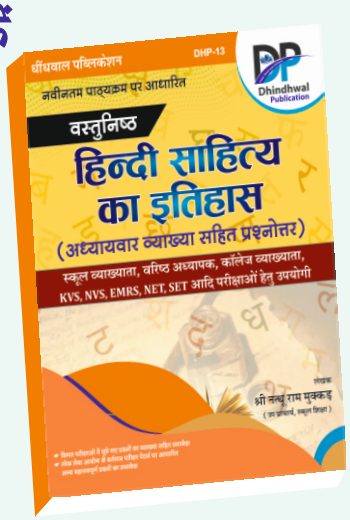

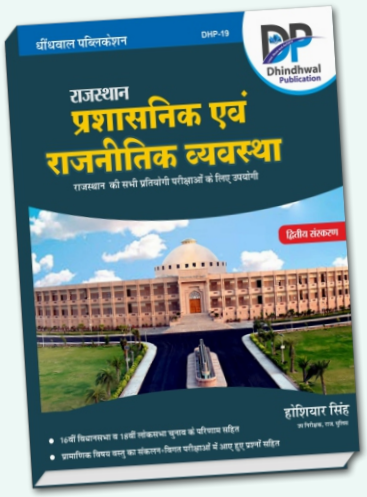

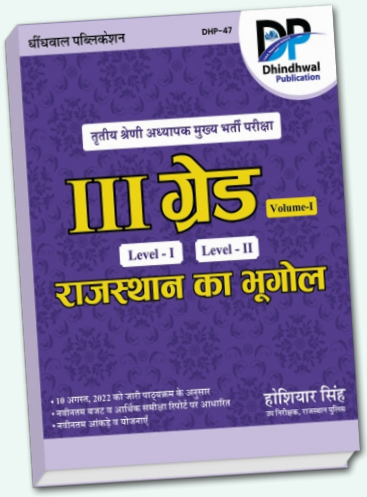

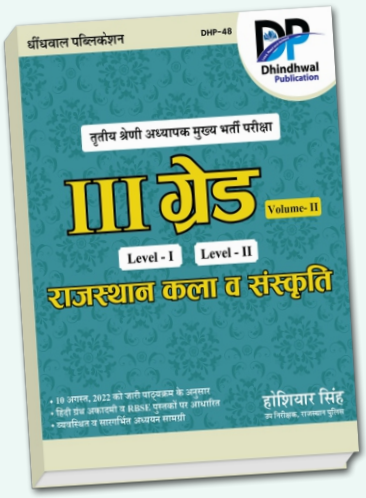

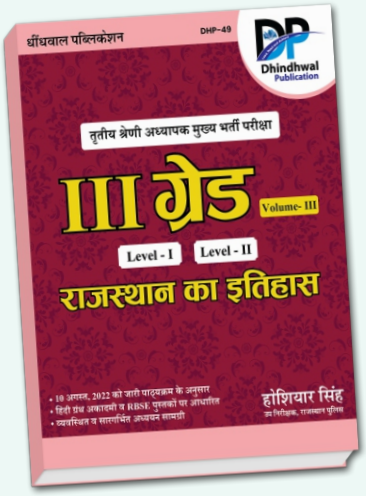

Dhindhwal Publication

:: मार्गदर्शकगण ::

होशियार सिंह

होशियार सिंह का जन्म ग्राम रतनपुरा तहसील राजगढ़ जिला चुरू (राजस्थान) में हुआ। आपने स्नातक करने के दौरान ही वर्ष 2003 से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी आरम्भ की, राजस्थान पुलिस (जिला बीकानेर वर्ष 2008) में कानिस्टेबल के पद पर चयन के साथ ही 2008 में तृतीय श्रेणी अध्यापक के पद पर चयन हुआ। आपने 5 वर्ष तक जिला राजसमंद में तृतीय श्रेणी अध्यापक के रूप में अपनी सेवाएँ दी, तत्पश्चात् द्वितीय श्रेणी शिक्षक (हिन्दी) 2013 में चयन होने पर आपने राजकीय माध्यमिक विद्यालय, कतरियासर (बीकानेर) में अपनी सेवाएँ दी, तत्पश्चात् राजस्थान पुलिस उपनिरीक्षक 2014 में चयन हुआ, वर्तमान में आप राजस्थान पुलिस में उप निरीक्षक हैं, आपको राजस्थान की विभिन्न प्रतिष्ठित कोचिंग संस्थानों में अध्यापन व मार्गदर्शन का गहन अनुभव है।

डॉ. मंगल यादव

डॉ. मंगल यादव का जन्म जयपुर जिला, राजस्थान में हुआ। आपने स्नातक करने के दौरान ही प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों को पढ़ाना प्रारम्भ कर दिया, इसी दौरान आप अनेक सरकारी सेवा में चयनित हुए। आपने राजस्थान की शिक्षक भर्ती के लिए शिक्षण विधियों की सबसे प्रसिद्ध पुस्तक ''मंगल शिक्षण विधियाँ'' से लाखों विद्यार्थियों के सपने को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। आपको राजस्थान की विभिन्न प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थाओं में अध्यापन व मार्गदर्शन का गहन अनुभव है।

हमारी अन्य पुस्तकें

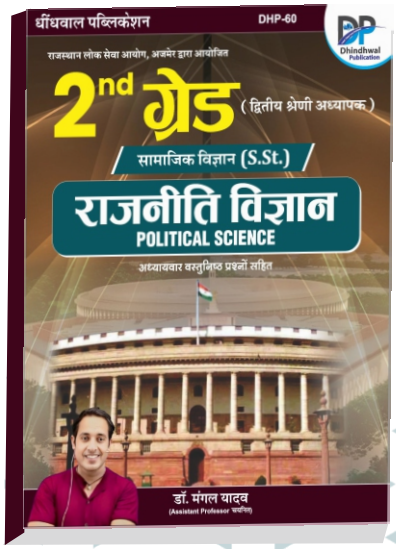

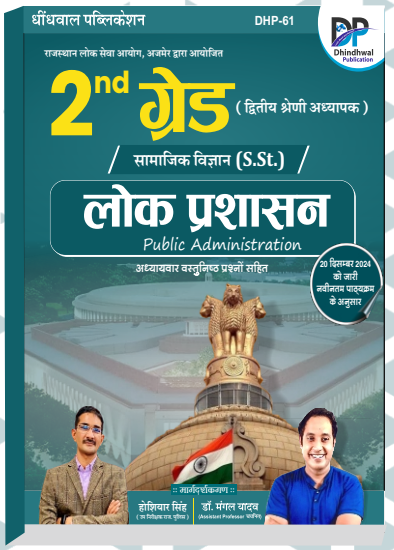

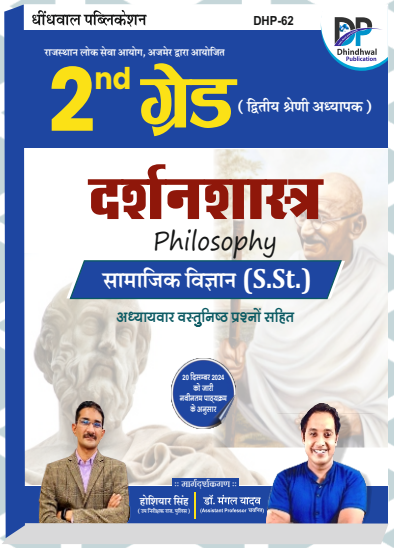

धींधवाल पब्लिकेशन

प्रस्तुत करते हैं–

Dhindhwal Publication

2nd ग्रेड (द्वितीय श्रेणी अध्यापक)

समाजशास्त्र (Sociology)

सामाजिक विज्ञान (S.St.)

(अध्यायवार वस्तुनिष्ठ प्रश्नों सहित)

- प्रामाणिक विषय–वस्तु का संकलन।
- परीक्षाओं के नवीन पैटर्न के अनुसार गहन व व्यापक पाठ्यसामग्री का संकलन।
- आरेख, मानचित्र, सारणियों सहित रोचक प्रस्तुतीकरण।
- पुस्तक की भाषा सरल एवं प्रत्येक अवधारणा को उदाहरण सहित समझाया गया है।

प्रकाशकः–
धींधवाल पब्लिकेशन
B-22, वैष्णो विहार, बीकानेर
मो.– 8306733800

लेखकः– डॉ. मंगल
(असिस्टेंट प्रोफेसर चयनित)

प्रकाशक:–

धींधवाल पब्लिकेशन

B-22, वैष्णो विहार, बीकानेर

मो.– 8306733800

– Dhindhwal Publication

– धींधवाल पब्लिकेशन

– Dhindhwal Classes

– @Publication-DP

– Dhindhwal Publication

बुक कोड– DHP- 63

© सर्वाधिकार– लेखक

फिक्स रेट– 121.00/–

मुद्रक–

पिंकसिटी ऑफसेट, जयपुर

इस पुस्तक के किसी भी अंश का लेखक तथा प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना मुद्रित करना, कराना तथा इस पुस्तक की व इस पुस्तक के किसी भाग की फोटोकॉपी, स्केनिंग, इलेक्ट्रोस्टेट, मशीनी टंकण अथवा किसी भी तरीके से पुनः उपयोग करना, पी.डी.एफ बनाकर वाट्सअप या टेलीग्राम आदि पर प्रसारित करना पूर्णतः वर्जित है।

इस पुस्तक को तैयार करने में पूर्ण सावधानी बरती गई है पुस्तक में दिये गये तथ्य व विवरण उचित व विश्वसनीय स्रोतों से प्राप्त किये गये हैं, फिर भी इसमें किसी त्रुटि, गलती, कमी अथवा लोप रह जाना संभव है। अतः ऐसी किसी भी त्रुटि, गलती, कमी अथवा लोप के कारण हुई क्षति अथवा क्लेश के लिए लेखक, प्रकाशक, सम्पादक, मुद्रक, विक्रेता व कर्मचारीगण का कोई उत्तरदायित्व नहीं होगा। आप उपर्युक्त सभी शर्तों को स्वीकार करते हुए स्वेच्छा से पुस्तक खरीद रहे हैं अतः दायित्व आपका स्वयं का होगा। सभी प्रकार के परिवादों का न्यायिक क्षेत्र बीकानेर होगा।

2nd ग्रेड (द्वितीय श्रेणी अध्यापक)

क्र.सं.	विषय–वस्तु	पृष्ठ संख्या
	RPSC 2nd ग्रेड परीक्षा (समाजशास्त्र) में पूछे गये प्रश्न	1–13
1.	समाजशास्त्र : अर्थ, स्वरूप एवं परिप्रेक्ष्य	14–24
☞	समाजशास्त्र का अर्थ, परिभाषाएँ, प्रकृति, क्षेत्र विषयवस्तु। समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य का अर्थ व परिभाषाएँ एवं प्रकार। समाजशास्त्र का विकास, भारत में समाजशास्त्र का विकास	
☞	अभ्यास प्रश्न (वस्तुनिष्ठ प्रश्न)	
2.	बुनियादी अवधारणाएँ: समाज, सामाजिक समूह, प्रस्थिति तथा भूमिका, सामाजिक परिवर्तन	25–56
☞	समाज का अर्थ व परिभाषाएँ एवं विशेषताएँ, समाज का उद्देश्य, समाज के तत्व, समाज के प्रकार, समाज उत्पत्ति के सिद्धांत, सामाजिक समूह का अर्थ व परिभाषाएँ एवं विशेषताएँ, सामाजिक समूह का वर्गीकरण, संदर्भ समूह का अर्थ व परिभाषाएँ एवं विशेषताएँ, समूह तथा समाज में अन्तर, समूह तथा समुदाय में अन्तर, प्रस्थिति व भूमिका का अर्थ व परिभाषाएँ एवं विशेषताएँ, प्रस्थिति के प्रकार, प्रदत्त एवं अर्जित प्रस्थिति में अंतर, प्रस्थिति की अवधारणा, भूमिका का अर्थ व परिभाषाएँ एवं विशेषताएँ, भूमिका के प्रकार, भूमिका की अवधारणा, प्रस्थिति व भूमिका में संबंध, प्रस्थिति व भूमिका का महत्त्व, सामाजिक परिवर्तन का अर्थ व परिभाषाएँ एवं विशेषताएँ। सामाजिक परिवर्तन के प्रकार, सामाजिक परिवर्तन के कारक, सामाजिक परिवर्तन के सिद्धांत	
☞	अभ्यास प्रश्न (वस्तुनिष्ठ प्रश्न)	
3.	जाति एवं वर्ग: अर्थ, विशेषताएँ, जाति एवं वर्ग में परिवर्तन	57–74
☞	जाति का अर्थ व परिभाषाएँ एवं विशेषताएँ व लक्षण, जाति का महत्त्व व दोष, जाति में कार्य, गुण, जाति व्यवस्था के प्रतिमान, जाति उत्पत्ति के सिद्धांत, प्रजाति का अर्थ व परिभाषाएँ, प्रकार, प्रभु जाति की विशेषताएँ, प्रभु जाति के निर्धारक तत्व, जजमानी व्यवस्था, संस्कृतीकरण, पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण, वर्ग का अर्थ व परिभाषाएँ एवं विशेषताएँ, वर्ग के प्रकार, जाति व वर्ग में अन्तर।	
☞	अभ्यास प्रश्न (वस्तुनिष्ठ प्रश्न)	
4.	वर्तमान सामाजिक समस्याएँ : जातिवाद, साम्प्रदायिकता, गरीबी, भ्रष्टाचार, एड्स	75–92
☞	सामाजिक समस्या का अर्थ व परिभाषाएँ, सामाजिक समस्याओं के प्रकार, सामाजिक समस्या के कारण, सामाजिक समस्या के विकास के चरण, सिद्धांत, जातिवाद का अर्थ व परिभाषाएँ, जातिवाद के विकास के कारक, जातिवाद के दुष्परिणाम व उपाय, साम्प्रदायिकता का अर्थ व परिभाषाएँ एवं विशेषताएँ साम्प्रदायिकता के कारण, साम्प्रदायिकता के दुष्परिणाम, गरीबी का अर्थ व परिभाषाएँ, भारत में गरीबी का कारण, गरीबी के परिणाम, गरीबी उन्मूलन के उपाय, भ्रष्टाचार का अर्थ व परिभाषाएँ, भ्रष्टाचार के कारण, भ्रष्टाचार के प्रकार, भ्रष्टाचार के प्रभाव, भ्रष्टाचार को रोकने के उपाय, एड्स क्या है, एड्स संक्रमण के प्रकार, परीक्षण	
☞	अभ्यास प्रश्न (वस्तुनिष्ठ प्रश्न)	
5.	वर्ण, आश्रम, धर्म, पुरूषार्थ, विवाह और परिवार अवधारणा	93–122
☞	वर्ण का अर्थ, प्रकार, वर्णों के कर्त्तव्य, वर्णों का महत्त्व, आश्रम व्यवस्था का अर्थ व प्रकार, धर्म का अर्थ, उत्पत्ति एवं परिभाषाएँ, धर्म की विशेषताएँ व लक्षण, धर्म के प्रकार्य/कार्य, धर्म उत्पत्ति के सिद्धांत, धर्म के दुष्परिणाम व हानियाँ, विवाह का अर्थ व परिभाषाएँ एवं विशेषताएँ, विवाह के उद्देश्य, आवश्यकता व कार्य, विवाह के प्रकार, विवाह के स्वरूप, मुस्लिम विवाह, परिवार का अर्थ व परिभाषाएँ एवं विशेषताएँ, परिवार के कार्य, परिवार के प्रकार, संयुक्त परिवार की विशेषताएँ व दोष, एकांकी परिवार की विशेषताएँ व दोष, परिवार व विवाह की उत्पत्ति के सिद्धांत।	
☞	अभ्यास प्रश्न (वस्तुनिष्ठ प्रश्न)	

प्राक्कथन

प्रस्तुत पुस्तक मेरे **पिताजी श्री बाबू शिव लाल यादव** (Ex-Army Officer– वर्तमान पद प्रधानाध्यापक) के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए मैं आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ। यह पुस्तक उन सभी विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है, जो राजस्थान में RPSC 2nd ग्रेड अध्यापक भर्ती परीक्षा के (सामाजिक विज्ञान S.St.) के लिए 'समाजशास्त्र' विषय की तैयारी कर रहे हैं।

इस पुस्तक में मैंने निम्न तथ्यों को सम्मिलित किया है–

1. पुस्तक की भाषा सरल एवं प्रत्येक अवधारणा को उदाहरण सहित समझाया गया है।
2. यह पुस्तक मानक पुस्तकों को आधार मानकर तथा RBSE/UGC/RPSC की विगत परीक्षाओं के प्रश्नों का विश्लेषण करके तैयार की गई है, ताकि विद्यार्थी सभी प्रश्नों को समझ सके और सभी प्रश्नों का सही उत्तर दे सके।
3. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी की पुस्तकों पर आधारित प्रामाणिक सामग्री का संकलन।
4. इस पुस्तक को इग्नु बोर्ड, विभिन्न ओपन विश्वविद्यालयों की पाठ्यपुस्तकों एवं विभिन्न संदर्भ पुस्तकों को आधार मानते हुए तैयार किया गया है।

इस पुस्तक के लेखन कार्य में मेरी बहन **डॉ. पूजा यादव, भाई विजय यादव, दिनेश कुमार** (I.A.S.), **डॉ. ममता** (Assistant Professor), **डॉ. रेखा चौधरी** (Assistant Professor), **महेन्द्र फौजी माण्डेला** (Indian Airforce) तथा **धींधवाल पब्लिकेशन** टीम का विशेष योगदान रहा है।

''अंधेरा, जब जिसको अखर गया, बस उसका जीवन फिर निखर गया..... डॉ. मंगल''

लेखकः– डॉ. मंगल
(असिस्टेंट प्रोफेसर चयनित)
मो. – 7976216970

RPSC 2nd ग्रेड परीक्षा (समाजशास्त्र) में पूछे गये प्रश्न

RPSC सेकंड ग्रेड (संस्कृत विभाग) भर्ती 2024

1. **यह किसका कथन है कि "मानव समाज में धर्म इतना सार्वभौमिक, स्थायी एवं व्यापक है कि धर्म को स्पष्ट रूप से समझे बिना हम समाज को नहीं समझ सकते हैं"?**
(1) बी. मालिनोवस्की (2) ई.बी. टायलर
(3) ए.आर. रैडक्लिफ ब्राउन (4) के. डेविस
(5) अनुत्तरित प्रश्न (3)

2. **समाजशास्त्रीय विश्लेषण करने वाली प्रथम कृति हर्बर्ट स्पेन्सर द्वारा लिखी गई पुस्तक का क्या नाम है?**
(1) एलीमेन्ट्स ऑफ सोशियोलॉजी
(2) द प्रिन्सिपल्स ऑफ सोशियोलॉजी
(3) ए हैण्डबुक ऑफ सोशियोलॉजी
(4) सोशियोलॉजी (5) अनुत्तरित प्रश्न (2)

3. **यह किसका मानना है कि सामाजिक वर्ग औद्योगिक समाजों के चारित्रिक लक्षण है?**
(1) योगेश अटल (2) एम.एस.ए. राव
(3) एस.एफ. नाडेल (4) टी.बी. बोटोमोर
(5) अनुत्तरित प्रश्न (3)

4. **निम्न में से किस समाजशास्त्री ने समाजशास्त्र को समाज के समग्र स्वरूप का क्रमबद्ध अध्ययन एवं व्याख्या करने वाला विज्ञान माना है?**
(1) एच.डब्ल्यू. ओडम (2) पी. जिसबर्ट
(3) एफ.एच. गिडिंग्स (4) एल.एफ. वार्ड
(5) अनुत्तरित प्रश्न (1)

5. **संरचनात्मक दृष्टि से किसने जातियों को "वंशानुगत रूप से विशिष्ट और पदानुक्रमिक रूप से व्यवस्थित समूह" के रूप में समझाया है, जबकि एक प्रणाली के रूप में, उन्होंने इसकी तीन विशेषताओं का उल्लेख किया है: पदानुक्रम, वंशानुगत विशेज्ञता और प्रतिकर्षण?**
(1) एस.एन. दासगुप्ता (2) एम.एस. गोरे
(3) बी.आर. चौहान (4) सी. बौगल
(5) अनुत्तरित प्रश्न (2)

6. **जाति के कार्यों को किसने दो स्तरों– सांस्कारिक और वैचारिक पर विश्लेषित किया है?**
(1) एम.एन. श्रीनिवास (2) नर्मदेश्वर प्रसाद
(3) आर.के. मुखर्जी (4) डी.एन. मजूमदार
(5) अनुत्तरित प्रश्न (1)

7. **'प्राथमिक समूह मानव स्वभाव की पोषिका (नर्सरी) हैं', यह किसने कहा है?**
(1) सी.एच. कूले (2) एमिल दुर्खीम
(3) ऑगस्टे कॉम्टे (4) जी.एच. मीड
(5) अनुत्तरित प्रश्न (1)

8. **निम्नलिखित में से कौनसा सामाजिक परिवर्तन का महत्त्वपूर्ण स्त्रोत नहीं है?**
(1) एकीकरण (2) खोज (3) आविष्कार (4) प्रसार
(5) अनुत्तरित प्रश्न (1)

9. **योगेन्द्र सिंह के अनुसार निम्न में से कौनसी जाति व्यवस्था में परिवर्तन का कारण नहीं है?**
(1) आधुनिकीकरण (2) नगरीकरण
(3) औद्योगिकीकरण (4) निजीकरण
(5) अनुत्तरित प्रश्न (4)

10. **एच.एम. जॉनसन द्वारा दिए गए चार बिंदुओं के आधार पर हम जान सकते हैं कि समाजशास्त्र एक वैज्ञानिक विषय है। निम्नलिखित में से कौनसा बिन्दु उनमें से एक नहीं है?**
(1) संचयी (2) सिद्धांतबद्ध (3) अनुभवाश्रित (4) नैतिक
(5) अनुत्तरित प्रश्न (4)

11. **निम्न में से कौनसा गरीबी उन्मूलन या कम से कम इसे महत्त्वपूर्ण रूप से कम करने के उपायों में से एक नहीं है?**
(1) वितरण न्याय (2) भूमि–मानव अनुपात
(3) रोजगार सृजन (4) काले धन का प्रवाह
(5) अनुत्तरित प्रश्न (3)

12. **हिन्दू धर्म की पुरुषार्थ व्यवस्था में, किस पुरुषार्थ को अन्तिम लक्ष्य मान गया है?**
(1) धर्म (2) मोक्ष (3) अर्थ (4) काम
(5) अनुत्तरित प्रश्न (2)

13. **प्राचीन समय में, परिवार में सन्तानोत्पत्ति के उद्देश्य से स्त्री को अपने पति के अतिरिक्त किसी अन्य पुरुष के साथ यौन संबंध स्थापित करने की अनुमति को क्या कहा जाता था?**
(1) निकटाभिगमन (2) ताली संस्कार (3) नियोग (4) करेवा
(5) अनुत्तरित प्रश्न (3)

14. **किसने समाज की परिभाषा देते हुए कहा है कि समाज कार्य प्रणालियों एवं रीतियों, अधिसत्ता एवं पारस्परिक सहायता, अनेक समूहों एवं श्रेणियों तथा मानव व्यवहार के नियन्त्रणों एवं स्वतंत्रताओं की व्यवस्था है?**
(1) एम. गिन्सबर्ग (2) मैकाइवर एवं पेज
(3) जॉन एफ. क्यूबर (4) एफ.एच. गिडिंग्स
(5) अनुत्तरित प्रश्न (2)

6. 'स्व संस्कृति केन्द्रितता' निम्नलिखित में से किस समूह विभाजन की विशेषता है?
(1) अन्तःसमूह एवं बाह्य समूह
(2) प्राथमिक समूह एवं द्वैतीयक समूह
(3) गैमिन शैफ्ट एवं गैसिल शैफ्ट
(4) अनौपचारिक समूह एवं औपचारिक समूह (1)

7. समाजशास्त्र का उद्‌गम स्थल है–
(1) फ्रांस (2) जर्मनी
(3) अमेरिका (4) ब्रिटेन (1)

8. निम्नलिखित में से किस भारतीय समाजशास्त्री ने भारतीय समाज को समझने हेतु मार्क्सीय परिप्रेक्ष्य को प्रयुक्त किया है?
(1) राधा कमल मुखर्जी (2) जी.एस. घूरिये
(3) आई.पी. देसाई (4) ए.आर. देसाई (4)

9. 'भूमिका प्रस्थिति का गत्यात्मक पक्ष है' का विचार किसका है?
(1) राल्फ लिण्टन (2) आर.के. मर्टन
(3) सी.एच. कूले (4) टालकट पारसंस (1)

10. निम्नलिखित में से हिन्दू विवाह के किस स्वरूप में 'कन्यादान' का संस्कार विद्यमान नहीं है?
(1) ब्रह्म विवाह (2) देव विवाह
(3) गन्धर्व विवाह (4) अर्ष विवाह (1)

11. दो वर्गों के रूप में 'बुर्जआ' एवं 'प्रोलितेरियत' की अवधारणाओं को प्रस्तुत किया है–
(1) कार्ल मार्क्स (2) वी.आई. लेनिन
(3) लुई अल्थ्यूजर (4) एन्टोनियो ग्रामशी (1)

12. हाल ही में भारतीय संसद द्वारा पारित 'लोकपाल बिल' किस सामाजिक प्रघटना को नियन्त्रित करेगा?
(1) भ्रष्टाचार (2) जातिवाद
(3) साम्प्रदायिकता (4) महिलाओं के विरुद्ध हिंसा (1)

13. 'कास्ट इन इण्डियन पालिटिक्स' के लेखक हैं–
(1) रामचन्द्र गुहा (2) आशीष नन्दी
(3) रजनी कोठारी (4) ए.आर. देसाई (3)

14. निम्नलिखित में से किसे वर्ण के रूप में नहीं स्वीकारा जाता है?
(1) ब्राह्मण (2) राजपूत
(3) वैश्य (4) शूद्र (2)

15. आई.पी. देसाई एवं के.एम. कपाड़िया के योगदान की सम्बद्धता है–
(1) परिहार व्यवस्था (2) वर्ग व्यवस्था
(3) जाति व्यवस्था (4) धर्म व्यवस्था (1)

16. अर्जुन सेन गुप्ता प्रतिवेदन की प्रस्तुत प्रघटनाओं की विवेचना से संबद्ध है–
(1) निर्धनता एवं असमानता
(2) जातिवाद एवं भ्रष्टाचार
(3) साम्प्रदायिकता एवं स्थानीयतावाद
(4) अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष एवं प्रजातिवाद (1)

16. निम्नलिखित में से कौनसा क्रम आश्रम की सामाजिक स्कीम हेतु उपयुक्त है?
(1) ब्रह्मचर्य–गृहस्थ–सन्यास–वानप्रस्थ
(2) ब्रह्मचर्य–गृहस्थ–वानप्रस्थ–सन्यास
(3) गृहस्थ–ब्रह्मचर्य–वानप्रस्थ–सन्यास
(4) गृहस्थ–वानप्रस्थ–सन्यास–ब्रह्मचर्य (2)

17. किसी भी समाज में परिवार उदाहरण है–
(1) प्राथमिक समूह (2) हम समूह
(3) अर्द्ध–प्राथमिक समूह (4) समुदाय (1)

18. निम्नलिखित में से किस भारतीय समाजशास्त्री ने संस्कृतिकरण की प्रक्रिया का सर्वप्रथम उल्लेख किया है?
(1) एम.एन. श्रीनिवास (2) जी.एस. घूरिये
(3) लुई ड्यूमा (4) योगेन्द्र सिंह (1)

द्वितीय श्रेणी शिक्षक भर्ती परीक्षा (दिसम्बर, 2011)

1. निम्नलिखित में से कौनसा एक कारक समाजशास्त्र की उत्पत्ति से संबंधित नहीं है–
(1) फ्रांस की राज्य क्रांति (2) औद्योगिक क्रान्ति
(3) रूस की समाजवादी क्रांति
(4) सामन्तवाद का यूरोप में पतन (3)

2. निम्नलिखित में से कौनसा तत्व दुर्खीम की दृष्टि से सामाजिक तथ्य की विशेषता नहीं है–
(1) बाह्यता (2) बाध्यता
(3) सामान्यता (4) वस्तुपरकता (4)

3. उस समाजशास्त्री का नाम बतायें जिन्होंने 'सामाजिक स्थितिशास्त्र' (सोशल स्टेटिक्स) एवं सामाजिक गतिकी (सोशल डायनामिक्स) को समाजशास्त्र की परिभाषा का आधार बनाया–
(1) आगस्त काम्ट (2) हरबर्ट स्पेन्सर
(3) मैक्स वेबर (4) आर.के. मर्टन (1)

4. निम्नलिखित में से कौनसी विशेषता संस्था की अवधारणा से संबंधित नहीं है–
(1) नियम एवं कार्यप्रणाली की जटिलता
(2) व्यक्तियों की सदस्यता
(3) अमूर्तता
(4) तुलनात्मक रूप से दीर्घकालीनता (2)

1 समाजशास्त्र : अर्थ, स्वरूप एवं परिप्रेक्ष्य

समाजशास्त्र का अर्थः

- समाजशास्त्र शब्द **लैटिन भाषा** के **सोशियस** और **ग्रीक भाषा** के **लोगस** शब्द से मिलकर बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ है **'समाज का विज्ञान या समाज का अध्ययन।'** दूसरे शब्दों में कहें तो समाजशास्त्र शब्द अंग्रेजी के सोशियोलॉजी शब्द का रूपांतरण है। **अंग्रेजी** के दो शब्द **सोशिओ और लॉजी** से मिलकर बना है। सोशिओ का अर्थ है समाज से संबंधित और लॉजी का अर्थ है **ज्ञान अथवा विज्ञान।**
- समाज का अध्ययन करने वाला विज्ञान, सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन करने वाला विज्ञान, सामाजिक अन्तः सम्बन्धों या सामाजिक समूहों का अध्ययन करने वाला विज्ञान है। समाजशास्त्र व्यक्ति और समाज के वैयक्तिक, सामाजिक सम्बन्धों की व्याख्या करता है, उनकी पारस्परिक प्रतिक्रियाओं का अध्ययन एवं विश्लेषण करता है। अतः कहा जा सकता है कि समाजशास्त्र समाज का विज्ञान है। **यह एक ऐसा विषय है, जिसमें मानव समाज के विभिन्न स्वरुप, संरचना एवं प्रक्रियाओं का क्रमबद्ध तरीके से अध्ययन किया जाता है।**

समाजशास्त्र की परिभाषाएँ

- समाजशास्त्र की कोई एक सर्वमान्य परिभाषा देना कठिन कार्य है। क्योंकि यह मानवीय समाज की विभिन्न एवं जटिल प्रघटनाओं, सिद्धान्तों तथ्यों एवं कारकों का अध्ययन समग्रता में करता है। इस विविधतापूर्ण तथ्यों से ही जटिल समाज का निर्माण होता है। अतः किसी एक परिभाषा द्वारा समाजशास्त्र के अर्थ को अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता। समाजशास्त्र की परिभाषाओं को मुख्यतः पाँच भागों में बांटा जा सकता है—

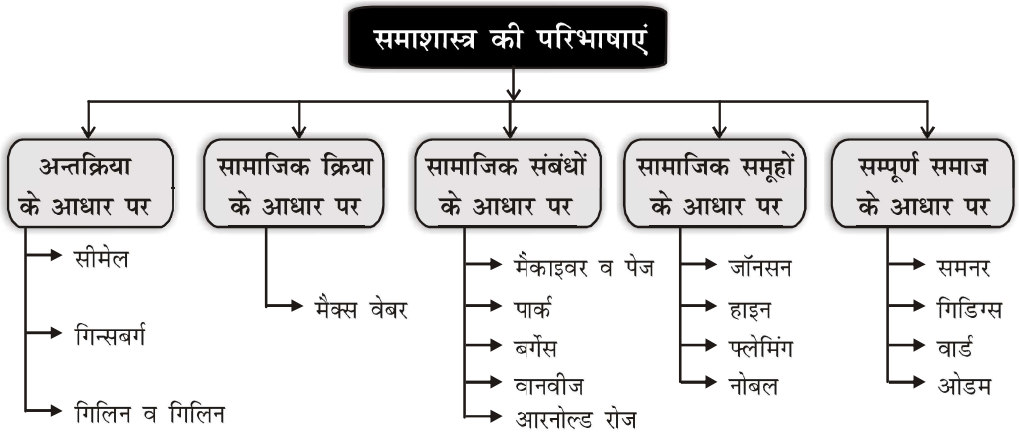

- **समाजशास्त्र की कुछ प्रमुख परिभाषाएँ—**

(1) **ऑगस्ट कॉम्टे** के अनुसार, ''समाजशास्त्र **सामाजिक स्थैतिकी** (Statics)/सामाजिक व्यवस्था (Order) एवं **सामाजिक गतिकी** (Dynamics)/ सामाजिक प्रगति Progress का विज्ञान है।''

क्या आप जानते हैं?

- समाजशास्त्र की प्रथम परिभाषा ऑगस्ट कॉम्टे ने अपनी पुस्तक Positive Philosophy में दिया। इसलिए ऑगस्ट कॉम्टे को समाजशास्त्र का जनक कहा जाता है।

- **मैकाइवर एवं पेज के अनुसार—**''समाजशास्त्र सामाजिक संबंधों के विषय में है।'' इनके अनुसार ''**सामाजिक संबंधों** के इसी जाल को समाज कहते हैं।'' (पुस्तक— **सोसायटी**)
- **जार्ज सीमेल** के अनुसार—''समाजशास्त्र मानवीय अतः संबंधों के स्वरूपों का विज्ञान है।''
- **मैक्स वेबर** के अनुसार ''समाजशास्त्र प्रधानतः सामाजिक संबंधों तथा कृत्यों का अध्ययन है।'' एक अन्य स्थान पर उन्होंने समाजशास्त्र को ''**सामाजिक क्रियाओं व्याख्यात्मक अध्ययन करने वाला विज्ञान है।**'' कहा।

- **गुडे एवं हॉट** ने अपनी पुस्तक ''मेथड्स इन सोशियल रिसर्च'' में बताया है कि किसी घटना, वस्तु या स्थिति का अध्ययन विभिन्न प्रकार से किया जा सकता है। इनके अनुसार किसी विषय का अध्ययन क्षेत्र, प्रकृति, सिद्धांत अवधारणाएँ एवं परिभाषाएं उसके परिप्रेक्ष्य को निर्धारित करती है।

❖ **समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य के दो प्रकार है—**

1. **वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य** (Scientific Perspective)
2. **मानवीय परिप्रेक्ष्य** (Humanistic Perspective)

✍ **क्या आप जानते है ?**

- समाजशास्त्र के सभी संस्थापक प्रतिपादकों ने समाजशास्त्र के वैज्ञानिक दृष्टिकोण का समर्थन किया है। लेकिन जर्मन समाजशास्त्री **विल्हेम डिल्थे** (1833-1911) ने सर्वप्रथम वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य के विपरीत मानवतावादी प्ररिप्रेक्ष्य का समर्थन करते हुए मानवीय विज्ञान की स्थापना का समर्थन किया। **मैक्स वेबर** के **वर्स्टेहेन** की अवधारणा भी डिल्थे से प्रभावित थी।

- समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य को सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से दो भागों में विभाजित किया जा सकता है-

(1) वृहद् सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य (Macro Theories) - प्रकार्यवादी सिद्धांत (दुर्खाइम एवं पारसंस) एवं संघर्षवादी सिद्वांत (मार्क्स)।

(2) सूक्ष्म सैद्धांन्तिक परिप्रेक्ष्य (Micro Theories) - अंत:क्रियावादी सिद्धांत एवं प्रतीकात्मक अतं:क्रियावादी सिद्धांत (जी.एच.मीड) जैसे- फेनोमैनोलॉजी एवं एथनोमैथडोलॉजी।

समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य के प्रकार

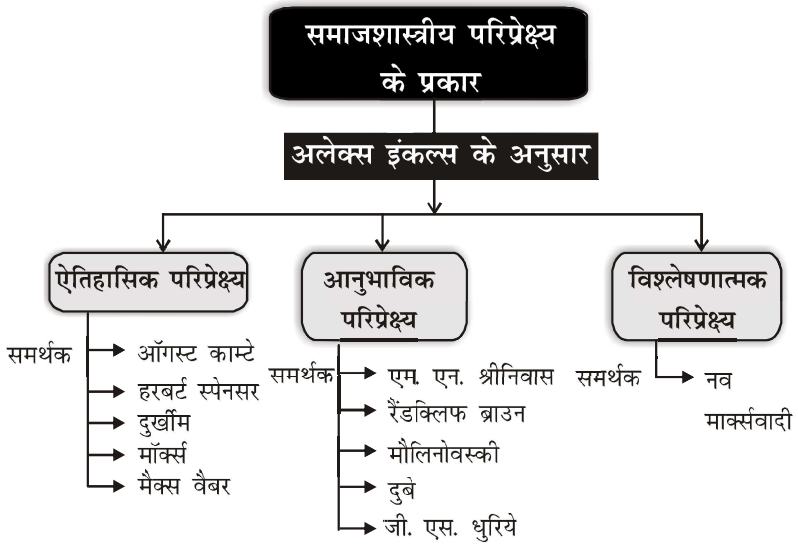

- **अलेक्स इंकल्स (What is Sociology)** ने समाजषास्त्रीय परिप्रेक्ष्य को तीन भागों में वर्गीकृत किया है-

(1) ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य (Historical Perspective) - इसमें इंकल्स ने सभी क्लासिकल सिद्धांतकारों को शामिल किया है। विशेष रूप से समाजशास्त्र के संस्थापक समाजशास्त्री कॉम्टे, स्पेन्सर, दुर्खाइम, मार्क्स, एवं बेबर के योगदान को इसमें शामिल किया जा सकता है।

(2) अनुभाविक परिप्रेक्ष्य (Empirical Perspectives) - इसमें क्षेत्रीय अध्ययनों के आधार पर सामाजिक मानवशास्त्रियों के योगदान को शामिल किया गया है। जैसे - रैडक्लिफ ब्राउन, मैलिनोवस्की, एम.एन. श्रीनिवास, दुबे एवं घुरिये।

(3) विश्लेषणात्मक परिप्रेक्ष्य (Analytical Perspective) - यह नवीन आलोचनात्मक सिद्वांतों तथा **फ्रेंकफर्ट स्कूल** के नवमार्क्सवादी सिद्धांतकारों को सम्मिलित करता है।

- **समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य से संबंधित पुस्तकें**
- **पीटर बर्जर की पुस्तक- "An Inviation to Sociology"**
- **सी.डब्लू मिल्स** की पुस्तक- "Sociological Imagination"
- **अलेक्स इंकल्स** की पुस्तक- **"What is Sociology?"**

2 बुनियादी अवधारणाएँ : समाज, सामाजिक समूह, प्रस्थिति तथा भूमिका, सामाजिक परिवर्तन

समाज का अर्थ व परिभाषाएँ:

- साधारण बोलचाल की भाषा में 'समाज' शब्द को व्यक्तियों के समूह के अर्थ के रूप में प्रयोग किया जाता है। मानव समाज का सुव्यवस्थित वैज्ञानिक अध्ययन समाजशास्त्र विषय के अंतर्गत किया जाता है। समाजशास्त्र जिस बिंदु के चारों ओर घूमता है वहीं समाज है। समाजशास्त्रियों ने समाज शब्द के कई अर्थ लगाएं हैं, किसी के लिए समाज व्यक्तियों का समूह है तो किसी के लिए समुदाय, तो किसी के लिए सम्पूर्ण मानव जाति भी **'समाज'** रहा है। समाज में मानव व्यव्हार व संबंधों के नियंत्रण की व्यवस्था होती है जो समाज के से अत्यधिक महत्त्व रखती है। महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। संगठन को स्थिरता प्रदान करने की दृष्टि समाज मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास में समाज ही मनुष्य को मनुष्य बनाता है। समाज के बाहर किसी भी व्यक्ति का अस्तित्व नहीं रहता है।

क्या आप जानते हैं?

- समाज एक महत्वपूर्ण व प्राथमिक समाजशास्त्र की महत्वपूर्ण अवधारणा मानी जाती है जो अमूर्त प्रक्रिया होती है।

- **गिडिंग्स** के अनुसार, 'समाज स्वयं संघ है, वह एक संगठन और व्यवहारों का योग है जिसमें सहयोग देने वाले एक दूसरे से सम्बंधित होते हैं।'
- **राईट** के अनुसार, 'यह व्यक्तियों का एक समूह नहीं है, अपितु विभिन्न समूहों के व्यक्तियों के बीच संबंधों की व्यवस्था है।'
- **रियूटर** के अनुसार, 'समाज एक अमूर्त धारणा है जो समूह के सदस्यों के बीच पाए जाने वाले पारस्परिक संबंधों की एक व्यवस्था है।'
- **मैकाइवर एवं पेज** के अनुसार, 'समाज चलनों एवं प्रणालियों की सत्ता व पारस्परिक सहयोग की, अनेक समूहों व भागों की, मानव व्यवहार के नियंत्रणों और स्वाधीनताओं की एक व्यवस्था है।'
- **जॉर्ज सीमेल**—समाज व्यक्तियों का समूह है, जो **अन्तः क्रिया** के माध्यम से परस्पर सम्बन्धित है।
- **पारसंस**—समाज मानवीय सम्बन्धों की वह जटिल व्यवस्था है, जो **साध्य-साधन** सम्बन्धों द्वारा क्रियारत रहते हैं, जो चाहे यथार्थ हो या प्रतीकात्मक।

समाज की विशेषताएं

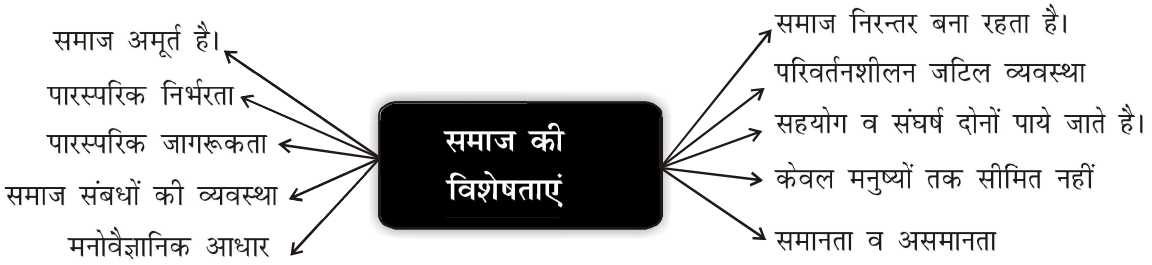

1. **समाज अमूर्त है:** समाज अमूर्त है, क्योंकि समाज केवल व्यक्तियों का समूह मात्र न होकर उनके बीच उत्पन सामाजिक संबंधों का एक जाल है। सामाजिक संबंधों को न तो देखा जा सकता है और न ही स्पर्श किया जा सकता है, इन्हें सिर्फ अनुभव किया जा सकता है।
2. **पारस्परिक निर्भरता:** समाज की एक प्रमुख विशेषता पारस्परिक निर्भरता है। मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के नाते अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समाज के दूसरे सदस्यों पर निर्भर रहता है। इसी पारस्परिक निर्भरता के कारण ही समाज के सदस्य सामाजिक संबंधों में बंधे हुए होते हैं। किसी भी समाज में समानता, एकता और सौहार्द्र की भावना पैदा होने का कारण पारस्परिक निर्भरता ही है। समाज का कोई भी कार्य व्यक्ति अकेले नहीं कर सकता, उसे समाज के अन्य सदस्यों पर निर्भर रहना पड़ता है।

समाज का उद्देश्य

समाज की आवश्यकता व उद्देश्य

आवश्यकता

1. जनसंख्या का प्रतिपालन।
2. पोषण का प्रबंध ।
3. क्षति के विरुद्ध संरक्षण की व्यवस्था ।
4. नए जीवों का पुनरुत्थान।
5. जनसंख्या के बीच कार्य का विभाजन।
6. समूह का संगठन एवं संरचना का गठन।
7. सदस्यों के बीच सम्पर्क की प्रेरणा।
8. पारस्परिक सहयोग की निरंतरता।
9. मानवीय एवं सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति।

उद्देश्य

1. समाज के सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति करना।
2. समायोजन स्थापित करने में सहायता प्रदान करना।
3. भौतिक सहायता प्रदान कर मानवीय समस्याओं का समाधान करना।
4. समाज के निर्बल एवं कमजोर वर्ग के लोगों को अच्छे जीवन स्तर की सुविधाएं उपलब्ध कराना।
5. सामाजिक संबंधों को सौहार्दपूर्ण एवं मधुर बनाना।
6. सामाजिक उन्नति एवं विकास के अवसर उपलब्ध कराना।
7. समाज के सदस्यों में सामाजिक नियंत्रण बनाये रवना एवं सामाजिक चेतना जागृत करना।
8. स्वस्थ जनमत तैयार करना।
9. समाज में शांति एवं व्यवस्था को प्रोत्साहित करना।
10. अपनी संस्कृति को बनाये रवने के लिए प्रयास करना।
11. समाज की निरंतरता को बनाये रवना।
12. एक बहुउद्देश्यीय समाज की स्थापना कर जान
13. कल्याण की भावना विकसित करना।

समाज के तत्व

समाज के तत्व (आधार) मैकाइवर पेज के अनुसार

- रीतियाँ
- कार्या प्रणालियाँ
- अधिकार
- पारस्परिक सहायता
- समूह व विभाग
- व्यवहार नियंत्रण
- स्वतन्त्रता

1. **रीतियाँ** —रीतियाँ या प्रथाएँ सामाजिक मानदंडों का एक प्रमुख प्रकार हैं। ये समाज के निर्माण में आधार के रूप में कार्य करती हैं। समाज में व्यवस्था बनाए रखने में ये महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं से संबंधित अनेक रीतियाँ पायी जाती हैं, जैसे खान-पान रहन-सहन, वेश-भूषा, विवाह, धर्म, जाति, शिक्षा आदि से संबंधित रीतियाँ।

2. **कार्य प्रणालियाँ** —कार्य-प्रणालियों को भी समाज का एक प्रमुख आधार माना गया है। मैकाइवर एवं पेज ने सामूहिक रूप से कार्य करने की प्रणालियों को ही संस्थाओं के नाम से पुकारा है। इन्हीं के माध्यम से एक समाज विशेष के लोग अपनी विभिन्न आवश्यकताओं या उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं। एक समाज में व्यक्तियों की सभी क्रियाएँ सामान्यत: इन कार्य प्रणालियों के अनुरूप ही होती हैं। इन्हीं से नियंत्रित होती हैं।

द्वितीयक समूह की विशेषताए:

1. **बड़ा आकार** —द्वितीयक समूह में सदस्यों की संख्या अधिक होती है, अतएव द्वितीयक समूह का आकार बड़ा होता है। द्वितीयक समूहों की सदस्यता की कोई सीमा नहीं है।
2. **उद्देश्यों का विशेषीकरण** —द्वितीयक समूह किसी उद्देश्य विशेष की पूर्ति के लिए बनाए जाते हैं। कोई भी द्वितीयक समूह उद्देश्यविहीन नहीं होता और न ही किसी स्वार्थरहित द्वितीयक समूह की कल्पना की जा सकती है। इसी कारण **किंबाल यंग** ने इन्हें 'विशेष स्वार्थ समूह' कहा है।
3. **अप्रत्यक्ष संपर्क** —द्वितीयक समूह में प्रत्यक्ष संपर्क भी हो सकते हैं, तथापि प्राय: अप्रत्यक्ष संपर्क ही अधिक पाया जाता है। इसका मुख्य कारण समूह के आकार बड़ा होना है। अप्रत्यक्ष संपर्क के कारण घनिष्ठता का जन्म उस सीमा तक नहीं होता है जितना कि प्राथमिक समूह में होता है।
4. **व्यक्तिगत तथा घनिष्ठ संबंधों का अभाव** —द्वितीय समूहों में घनिष्ठता का अभाव पाया जाता है। द्वितीयक समूह का आकार बड़ा होने के कारण प्रत्येक सदस्य परस्पर वैयक्तिक रूप से संबंध स्थापित नहीं कर पाते, अत: उनमें घनिष्ठता नहीं आ पाती है।
5. **उद्देश्यों की भिन्नता** —द्वितीयक समूह में प्रत्येक व्यक्ति अपने हित या लक्ष्य को पूरा करने की सोचता है। जब सभी सदस्य अपने ही हित को पाने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे जब उस स्थिति में उद्देश्यों की भिन्नता पाई जाएगी। उद्देश्यों की भिन्नता के कारण ही द्वितीयक समूह में स्वार्थ-सिद्धि तथा प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहन मिलता है।
6. **औपचारिक संबंध** —द्वितीयक समूहों के सदस्यों का पारस्परिक संबंध कुछ निश्चित नियमों व उपनियमों के अनुसार नियंत्रित होता है। यदि ये नियम नहीं हो तो इन समूहों में अव्यवस्था फैल जाएगी। इन नियमों के कारण सदस्यों का संबंध औपचारिक होता है।
7. **इच्छा से स्थापित** —चूँकि ये विशेष स्वार्थ समूह होते हैं इस कारण इनकी स्थापना जान-बूझकर की जाती है। जब सदस्यों को कोई विशेष लक्ष्य या उद्देश्य प्राप्त करना होता है तो उस दशा में लोग द्वितीयक समूह की स्थापना करते हैं ताकि उनके लक्ष्यों की पूर्ति हो सके।

- कूले की व्याख्या के आधार पर स्टीवर्ट ने प्राथमिक एवं द्वितीयक समूहों में अन्तर इस प्रकार बताया है।

क्र. सं.	प्राथमिक समूह	द्वितीयक समूह
1.	भावनात्मक लगाव	गैर भावनात्मक संगठन
2.	घनिष्ठ संबंध	प्रतियोगी संबंध
3.	आमने-सामने की क्रियाएँ	घनिष्ठता में कमी
4.	समानुरूपता	विभिन्नता में वृद्धि
5.	मनोवैज्ञानिक सुरक्षा	आर्थिक कुशलता
6.	संबंध स्वयं में लक्ष्य	संबंध स्वयं में साधन

संदर्भ समूह

✦ संदर्भ समूह की अवधारणा को हरबर्ट हाइमैन ने 1942 में अपनी पुस्तक The Psychology of Status में प्रतिपादित किया है। एक संदर्भ समूह ऐसा समूह है जिसे व्यक्ति काल्पनिक रूप से चयन करता है, उस समूह के अनुरूप व्यवहार करता है, उस समूह के प्रतिमानों, मूल्यों एवं नियमों को अपने व्यवहार में डालने का प्रयास करता है। संदर्भ समूह लोगों का एक संग्रह है जिसे हम अपने लिए तुलना के मानक के रूप में उपयोग करते हैं।

✦ **क्या आप जानते हैं?**

- थियोडोर न्यूकॉम्ब ने **"Personality and Social change"**(1943) में संदर्भ समूह अवधारणा को प्रयुक्त किया।
- अमेरिकी समाजशास्त्री सैमुअल स्टाऊफर ने **"The American Soldier"** (1949) में सदर्भ समूह को अध्ययन में प्रयोग किया। जिसे बाद में मर्टन एवं लैजर्सफेल्ड ने इसे सैद्धांतिक ढाँचे में ढाला। इस प्रकार संदर्भ समूह की अवधारणा के विकास में हाइमैन न्यूकॉम्ब, शेरिफ स्टाफर एवं मर्टन का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

भूमिका के प्रकार

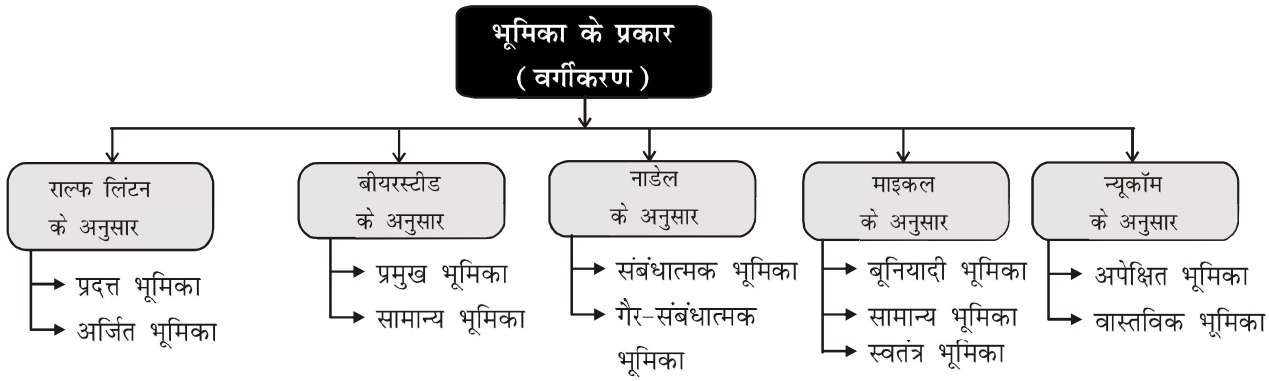

1. **प्रदत्त भूमिका:** इनका संबंध प्रदत्त प्रस्थिति से होता है। जैसे प्रदत्त प्रस्थिति होती है वैसे ही प्रदत्त भूमिका भी होती है। जैसे पति-पत्नी, माता-पिता, भाई-बहन, मामा-मामी, राजा, बालक, युवा एवं जाति की प्रदत्त भूमिकाएं। जो प्रस्थितियां प्रदत्त प्रस्थितियां होती हैं, उन प्रदत्त प्रस्थितियों के पीछे का कार्य निर्वहन ही प्रदत्त भूमिका के अंतर्गत आता है।

2. **अर्जित भूमिका:** अर्जित भूमिकाओं का संबंध अर्जित प्रस्थितियों से होता है। जैसे प्राध्यापक, डॉक्टर, इंजीनियर, उद्योगपति, खिलाड़ी. नेता आदि अर्जित प्रस्थिति हैं। इनके पीछे जो कार्य दायित्व निभाने होते हैं, वही अर्जित भूमिका के अंतर्गत आते हैं।

भूमिका की अवधारणा:

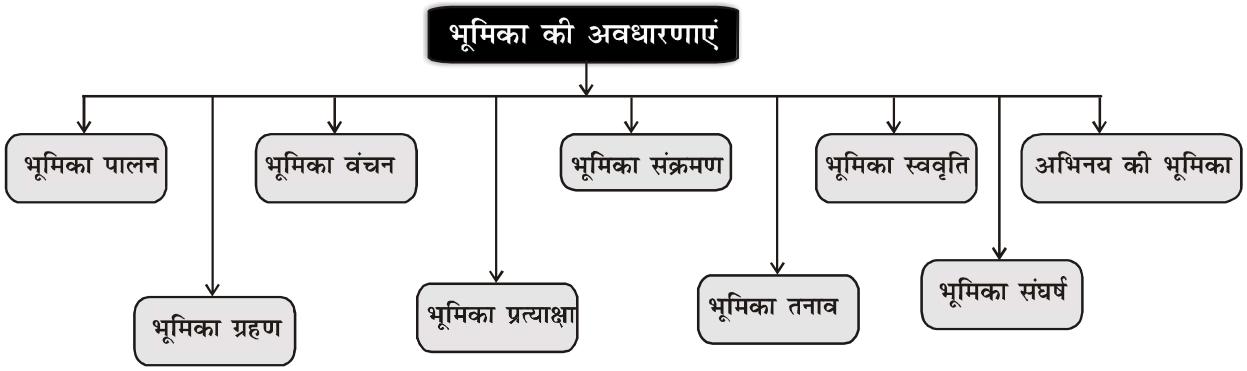

(1) **भूमिका पालन** – प्रस्थिति से सम्बन्धित उत्तरदायित्वों को निभाना ही भूमिका पालन है।

(2) **भूमिका ग्रहण** –वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति आदर्श-पुरुषों की अथवा विशिष्ट भूमिकाओं को ग्रहण करता है।

(3) **भूमिका वंचना**—किसी व्यक्ति द्वारा एक प्रस्थिति को त्यागकर दूसरी प्रस्थिति ग्रहण करते समय पूर्व प्रस्थिति की भूमिकाओं को त्यागना भूमिका वंचना है एवं मध्य की स्थिति **भूमिका संक्रमण** कहलाती है या इस दौरान व्यक्ति संक्रमण काल से गुजरता है। भूमिका संक्रमण **'के. डेविस'** की अवधारणा।

(4) **भूमिका प्रत्याक्षा**- एक पद धारण करने के फलस्वरूप समाज व्यक्ति से जिस प्रकार की भूमिका की अपेक्षा करता है उसे भूमिका प्रत्यक्षा कहा जाता है। कई बार भूमिका प्रत्यक्षा और व्यक्ति द्वारा निभाई जाने वाली वास्तविक भूमिका में अंतर होने पर समाज में अव्यवस्था पैदा हो जाती है।

(5) **भूमिका संक्रमण**- जब एक व्यक्ति एक भूमिका को पूर्णरूपेण त्याग कर दूसरी भूमिका को ग्रहण करता है, उस बीच की स्थिति को भूमिका संक्रमण की स्थिति कहा जाता है। इस स्थिति में भूमिका तनाव की संभावना रहती है।

(6) **भूमिका तनाव** —जब कोई व्यक्ति **पहली बार** प्रस्थिति से संबंधित भूमिका निर्वाह करता है तो वह मनोवैज्ञानिक अस्थिरता या भय के मनोविज्ञान का सामना करता है, यही उसकी भूमिका तनाव की स्थिति है। क्योंकि भूमिका की सफलता-असफलता उसके भविष्य को निर्धारित करती है। जैसे—जब कोई शिक्षक पहली बार कक्षा में पढ़ाने जा रहा है।

(7) **भूमिका स्ववृति** - व्यक्ति का किसी विशेष भूमिका की निवार्ह की अधिक रूचि भूमिका स्ववृत्ति कहलाती है।

उदाहरणरूप - किसी को खेल में रूचि है लेकिन कविता लिखने का शौक है।

स्थायित्व आता है, जबकि राजनीतिक उथल-पुथल समाज में अस्थिरता के कारण बनते हैं। दोनों ही परिस्थितियों में सामाजिक परिवर्तन होता है। हिटलर का अधिनायकवाद, भारत का विभाजन, साम्यवादी क्रांति आक्रमण, कश्मीर समस्या आदि ने विभिन्न सामाजिक परिवर्तन को जन्म दिया। स्वतंत्र भारत में प्रजातांत्रिक व्यवस्था, चुनावों में रुचि, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक समस्या यह सभी सामाजिक परिवर्तन के कारण बने हैं।

8. **कानून:** सरकार द्वारा बनाए गए कानून एक तरफ सामाजिक नियंत्रण बनाने में मददगार होते हैं, वहीं दूसरी तरफ सामाजिक परिवर्तन में भी सहायक होते हैं। कानून के द्वारा समाज की बुराइयों का अंत होता है और सामाजिक नियमों की रक्षा होती है। भारतवर्ष में कानून द्वारा जमीदारी प्रथा का अंत, बाल विवाह, बहुविवाह, सती प्रथा, छुआछूत को समाप्त करके देश में सामाजिक जीवन में व्यापक परिवर्तन लाए गए हैं। लोगों को कानून के द्वारा ही इन बुराइयों के बारे में समझाया जा सकता है। वरन् सामाजिक बुराई को खत्म करना दुष्कर कार्य है।

कानून बनाकर लागू किया जाए तो ही वे मानने के लिए बाध्य होते हैं। इसलिए कानून किसी भी समाज में परिवर्तन लाने में एक महत्वपूर्ण साधन है।

9. **धर्म:** समाज और मनुष्य पर धर्म सामाजिक परिवर्तन का कारक है। धर्म का नियंत्रण हमेशा से समाज और व्यक्ति पर रहा है। भारतीय समाज में धर्म की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आर्य समाज, ब्रह्म समाज और धार्मिक आंदोलनों ने भारतीय जीवन में अनेकों परिवर्तन लाए हैं। आजादी के बाद भारतीय संविधान ने धर्मनिरपेक्षता को अपना आदर्श माना है और उसका प्रभाव जनसमुदाय पर भी पड़ा है। धार्मिक सत्संग, धार्मिक प्रवचन और साधु महात्माओं ने भी विचारों में बहुत परिवर्तन लाए हैं। धार्मिक एवं अधार्मिक व्यक्ति के जीवन शैली में भी कई अंतर एवं परिवर्तन देखने को मिलते हैं। विभिन्न धर्मों के अनुयायियों द्वारा भी समाज में परिवर्तन लाने का प्रयास किया गया है।

सामाजिक परिवर्तन के सिद्धांत

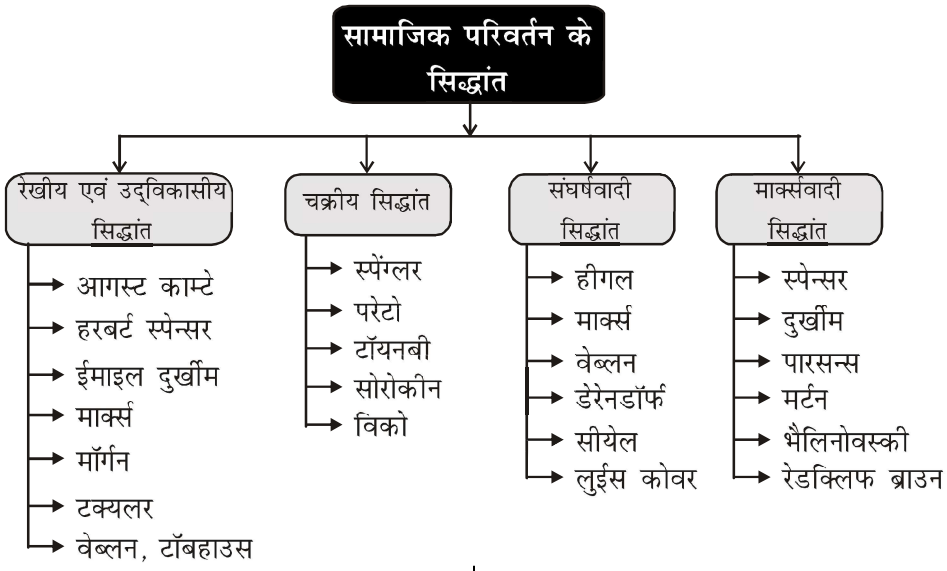

उद्विकासीय एवं रेखीय सिद्धान्त

- ये सिद्धान्तकार डार्विन के **जैविकीय उद्विकासीय सिद्धान्त** से प्रभावित थे तथा इनकी मान्यता है कि समाज मे परिवर्तन हमेशा एक सीधी रेखा मे **सरलता से जटिलता** की ओर **स्वतः अंतरनिहित शक्तियों** के माध्यम से होता है। इसमें पूर्ववर्ती अवस्था की पुनरावृति नहीं होती एवं परिवर्तन निरंतर होता रहता है। जैसे एक जीव का उद्विकास होता है, वैसे ही समाज का भी उद्विकास एक सीधी रेखा में होता है।

(1) कॉम्टे का सिद्धान्त—कौंत ने सामाजिक परिवर्तन की व्याख्या **बौद्धिक विकास** के संदर्भ में की तथा बताया कि ज्ञान के विकास के अनुसार ही समाज का विकास व परिवर्तन होता है। इन्होने बौद्धिक विकास व सामाजिक विकास के तीन स्तर माने—

1. **धार्मिक स्तर**—इस सामाजिक अवस्था में मनुष्य प्रत्येक सामाजिक यथार्थ का मूल्यांकन **धर्म** या **ईश्वर** के केन्द्र में रखकर करता था।

➢ धर्म के विकास के भी आपने तीन स्तर बताए -

✦ **वस्तुवाद - बहुदेववाद - एकेश्वरवाद**

2. **तात्त्विक स्तर**—इस अवस्था में अलौकिक शक्ति (Super nataral power) में विश्वास कम हुआ तथा सामाजिक घटनाओं की व्याख्या उसके **गुणों** के आधार पर होने लगी। जीव की **'अमूर्त शक्ति'** को ही सभी घटनाओं का कारण माना गया। इस स्तर में **तर्क / चिंतन** महत्वपूर्ण पक्ष हो जाता है।

3. **प्रत्यक्षवादी स्तर**—इसमें समस्त सामाजिक यथार्थ की व्याख्या **वैज्ञानिक नियमों** तथा **तर्क** के आधार पर की जाती है। **कारण-कार्य** नियम के आधार विश्लेषण होता है। ज्ञान प्राप्ति हेतु **अवलोकन, निरीक्षण-परीक्षण** जैसी अनुभवमूलक पद्धतियाँ को प्रयुक्त किया जाता है।

इस प्रकार कौंत के अनुसार चिंतन या बुद्धि के विकास के साथ-साथ ही समाज का विकास भी होता है जो कि सरलता / समानता से जटिलता / असमानता की तरफ अग्रसर होता है।

सामाजिक परिवर्तन से संबंधित अवधारणाएं एवं उनके प्रतिपादक–			
क्र. सं.	अवधारणा	प्रतिपादक	पुस्तक
1.	आर्थिक निर्धारणवाद, संघर्षवादी सिद्धान्त	कार्ल मार्क्स	कम्यूनिस्ट मेनिफेस्टो, दास कैपिटल
2.	प्रौद्योगिकी निर्धारणवाद	बेब्लन	द थ्योरी ऑफ लेजर क्लास
3.	यांत्रिक व सावयवी समाज	दुर्खीम	डिविजन ऑफ लेबर इन सोसायटी
4.	गैमिन शॉफ्ट–गॅसल शॉफ्ट	टॉनीज	कम्पयूनिटी एंड सोसायटी
5.	सामाजिक उद्विकास	सपेंन्सर	प्रिंसिपल ऑफ सोशियोलॉजी
6.	सांस्कृतिक विलंबन	ऑगबर्न	Social change
7.	सांस्कृतिक गतिशीलता	सोरोकिन	Social & Cultural dynamics
8.	सांस्कृतिक विभाजन	सोरोकिन	Social & Cultural dynamics
9.	चुनौति एवं प्रत्युत्तर का चक्रीय सिद्धान्त	टायनबी	A study of history
10.	सामाजिक परिवर्तन का चक्रीय सिद्धान्त	स्पेंग्लर	Dycline of the west
11.	सांस्कृतिक विकास का सिद्धान्त	स्पेंग्लर	Dycline of the west
12.	अभिजात वर्ग का परिभ्रमण	विल्फ्रेड परेटो	mind and Society
13.	अतिमानस/अतिमान (Supermind)	श्री अरविन्द	लाइफ डिवाइन
14.	समझौता (Arbitration)	पर्सी एस. कोहेन	मोर्डन सोशल थ्योरी

अभ्यास प्रश्न

1. प्रस्थिति क्रम, प्रस्थिति पुंज, भूमिका पुंज की अवधारणा प्रतिपादित की -
(1) लिंटन (2) डेविस
(3) मर्टन (4) जॉनसन
(5) अनुत्तरित प्रश्न (3)

2. ऑफिस, स्टेशन, स्तर की अवधारणा प्रतिपादित की -
(1) मैकाइवर (2) डेविस
(3) लिंटन (4) मर्टन
(5) अनुत्तरित प्रश्न (2)

3. 'योग्यता' आधार है -
(1) प्रदत प्रस्थिति (2) अर्जित प्रस्थिति
(3) दोनों का (4) दोनों नहीं
(5) अनुत्तरित प्रश्न (2)

4. 'सोशल डिफरेशिएशन' पुस्तक के लेखक है ?
(1) पारसन्स (2) के. डेविस एवं मूर
(3) सिविल नार्थ (4) दुर्खीम
(5) अनुत्तरित प्रश्न (3)

☞ **व्याख्या:** नार्थ ने प्रकार्य, संस्कृति, रूचि व संस्तरण को विभेदीकरण का आधार बताया।

5. "प्रथा पूर्वजों का अनुकरण है और फैशन समकालीनों का अनुकरण है"
(1) बीयरस्टीड (2) मैकाइवर (3) ग्रेविल टार्डे
(4) समनर
(5) अनुत्तरित प्रश्न (3)

6. "आयु के आधार पर प्रस्थिति का निर्धारण जैविक की बजाय सांस्कृतिक अधिक है।" कथन किसका है ?
(1) लिंटन (2) मर्टन
(3) इलियट एवं मैरिल (4) जार्ज लुंडबर्ग
(5) अनुत्तरित प्रश्न (4)

7. प्रस्थिति एवं भूमिका का अवधारणात्मक स्तर पर सर्वप्रथम उल्लेख किया ?
(1) अरस्तु (2) लिंटन
(3) मर्टन (4) डेविस
(5) अनुत्तरित प्रश्न (2)

8. भारत मे 'नए नगरों' के विकास का प्रमुख कारण है ?
(1) आधुनिकीकरण (2) औद्योगिकरण
(3) पश्चिमीकरण (4) संस्कृतिकरण
(5) अनुत्तरित प्रश्न (2)

9. औद्योगिकरण की प्रक्रिया संबंधित है ?
(1) लौकिकीकरण (2) पश्चिमीकरण
(3) नगरीकरण (4) आधुनिकीकरण
(5) अनुत्तरित प्रश्न (3)

10. व्यवसायो का बाहुल्य एवं विभिन्नता, भौतिकवाद, व्यक्तिवाद, औपचारिक एवं द्वितीयक संबंध, अनामपन, जटिलता, कृत्रिमता, सामाजिक गतिशीलता आदि विशेषताएं है -
(1) शहर (नगर) (2) कस्बा
(3) गांव (4) क्षेत्र
(5) अनुत्तरित प्रश्न (1)

3 जाति एवं वर्ग: अर्थ, विशेषताएँ, जाति एवं वर्ग में परिवर्तन

जाति

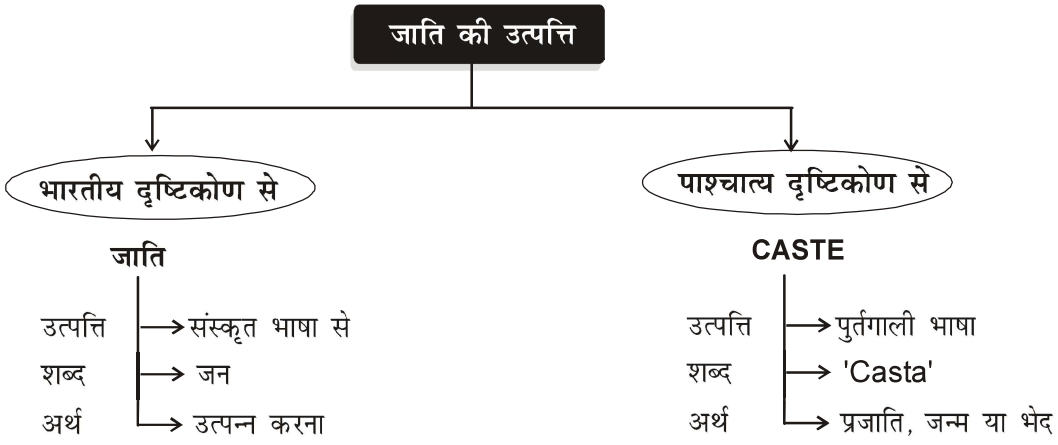

✦ **जाति की परिभाषाएं**

- **मजूमदार और मदान के अनुसार,** ''जाति एक बन्द वर्ग है।''
- **मैकाइवर व पेज के अनुसार,** ''जब व्यक्ति की स्थिति पूर्व निश्चित होती है, अर्थात् जब व्यक्ति अपनी स्थिति में किसी भी प्रकार के परिवर्तन की आशा लेकर उत्पन्न नहीं होता, तब व्यक्ति समूह या वर्ग जाति के रूप में स्पष्ट होता है।
- **मैक्स वेबर के अनुसार,** ''जाति एक प्रस्थिति समूह है''
- **कूले के अनुसार,** ''जाति एक वर्ग है जो वंशानुक्रम पर आधारित है।
- **रिजले के अनुसार,** 'जाति परिवार या कई परिवारों का संकलन है।'

क्या आप जानते हैं?

- जाति शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 1563 में ग्रेसिया डी ओर्टा ने किया।
- **ए.आर. वाडिया** का मानना है कि कास्ट शब्द लैटिन भाषा के 'कास्टस' (Castus) शब्द से बना है।

जाति की विशेषताएं व लक्षण

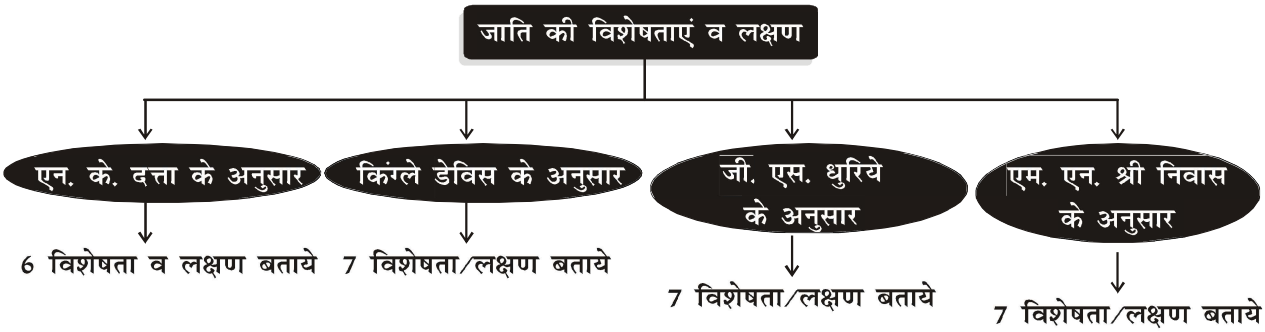

✦ **एन० के० दत्त** ने जाति व्यवस्था के निम्नलिखित छह लक्षणों व विशेषताओं का उल्लेख किया है-

(1) जाति का कोई भी सदस्य अपनी जाति से बाहर विवाह नहीं कर सकता है।

(2) प्रत्येक जाति में भोजन और खान-पान सम्बन्धी कुछ-न-कुछ प्रतिबन्ध होते हैं जो सदस्यों को अपनी जाति से बाहर भोजन करने पर रोक लगाते हैं। ये प्रतिबन्ध प्रत्येक जाति में लागू होते हैं।

(3) प्रायः जाति के पेशे निश्चित होते हैं।

4 वर्तमान सामाजिक समस्याएं : जातिवाद, साम्प्रदायिकता, गरीबी, भ्रष्टाचार, एड्स

सामाजिक समस्या अर्थः

- समाज में हमेशा आदर्श स्थिति (Ideal Condition) नहीं होती फलतः व्यक्तिगत व सामाजिक विकास में बाधा उत्पन्न होती है। यही समाज में आदर्शहीन अथवा प्रतिकूल दशा/स्थिति/परिस्थिति सामाजिक समस्या कही जातीहै।
- इस प्रकार एक समाजशास्त्रीय प्रत्यय के रूप में सामाजिक समस्या को **बाधक परिस्थिति** के रूप में जाना जाता है जो विकास को अवरूद्ध करती है।
- भारतीय समाज के संदर्भ में **जातिवाद, सांप्रदायिकता, क्षेत्रवाद, गरीबी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, जनसंख्या वृद्धि, अशिक्षा, मद्यपान, अपराध, बाल अपराध, दहेज प्रथा, विवाह-विच्छेद, विद्यार्थी असंतोष, श्रमिक असंतोष, बाल श्रम, एड्स, वैश्यावृत्ति, भिक्षावृत्ति, अनुसूचित जाति, जनजाति, महिला, अल्पसंख्यक, पिछड़ा वर्ग एवं अन्य कमजोर वर्गों के प्रति हिंसा व अपराध को सामाजिक समस्या** की श्रेणी में रखा जा सकता है।

✦ सामाजिक समस्या की परिभाषाएं:

1. **अरनोल्ड एम. रोज** के अनुसार, 'सामाजिक समस्या एक ऐसी अवस्था है जो किसी समूह के द्वारा स्वयं के सदस्यों के लिए असंतोश के उद्गम के रूप में पाई जाती है तथा इसमें उन विकल्पों को मान्यता प्रदान की जाती है जिसके द्वारा कोई समूह अथवा इसका सदस्य किसी न किसी प्रकार का परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित होता है। इसे (सामाजिक परिस्थिति/अवस्था) सामाजिक समस्या इसलिए स्वीकार किया जाता है क्योंकि यह सामाजिक परिवेश में ही पाई जाती है और इसके उत्तरदायी कारक सामाजिक परिवेश में ही विद्यमान रहते हैं।'
2. **पॉल एच. लेंडिस** के अनुसार, 'सामाजिक समस्याएं व्यक्तियों के कल्याण से सम्बन्धित अपूर्ण आकांक्षाए होती है। सामाजिक समस्याओं के संदर्भ में लेंडिस का अभिप्राय यह है कि जब व्यक्ति की इच्छाएं, आवश्यकताएं अथवा आकांक्षाओं की पूर्ति नहीं हो पाती तब वे सामजिक समस्याओं का स्वरूप ले लेती हैं।'
3. **रिचर्ड सी. फुलर एवं रिचर्ड मेयर्स** के अनुसार, 'व्यवहार के जिन मानदण्डों अथवा परिस्थितियों को किसी समय विशेष में समाज के अधिकां सदस्य अवांछनीय स्वीकार करते हैं. सामाजिक समस्याएं कहलाते हैं। इन विद्वानों की मान्यता है कि इन समस्याओं के निराकरण तथा कार्यक्षेत्र को सीमित करने के लिए सुधारात्क नीतियों, कार्यक्रमों एवं सेवाओं की अपरिहार्यता होती है।'
4. **रोब अर्ल एवं जी. जे. सेल्जनिक**- सामाजिक समस्या के संदर्भ में लिखते हैं कि यह (सामाजिक समस्या) मानवीय सम्बंधों को खतरनाक तरीके से प्रभावित करती है और समाज के अस्तित्व के लिए खतरा उत्पन्न कर देती है तथा अनेक लोगों की आशाओं पर तुषारापात करती है।
5. **क्लेरेंस मार्श केस** के अनुसार, 'सामाजिक समस्या का अभिप्राय किसी ऐसी सामाजिक परिस्थिति से है जो किसी भी समाज में योग्य अवलोकनकर्ताओं का ध्यान आकर्षित करती है तथा सामुहिक अथवा सामाजिक क्रियाविधि के द्वारा समाधान निकालने का प्रयास करती है।'
6. **फ्रांसिस ई. मेरिल तथा एच. डब्ल्यू एल्डरिज** के अनुसार, 'सामाजिक समस्याओं की उत्पत्ति के संदर्भ में लिखते हैं कि सामाजिक समस्याएं उस अवस्था में जन्म लेती है जब गतिहीनता के कारण काफी संख्या मे लोग स्वयं की अपेक्षित भूमिकाओं के निर्वहन में असमर्थ होते हैं।'
7. **शेपर्ड तथा वॉस** के अनुसार, 'सामाजिक समस्या समाज की कोई भी एक ऐसी सामाजिक दशा होती है जिसे समाज के बहुत बड़े भाग या शक्तिशाली भाग द्वारा अवांछनीय तथा ध्यान देने योग्य समझा जाता है।'
8. **मेरी ई. वाल्या एव पॉल एच. फर्फ** के अनुसार, 'सामाजिक समस्याएं सामाजिक आदर्शों का विचलन है जिनका निराकरण सामुहिक प्रयासों से ही सम्भव हो सकता है।'
9. **पॉल बी हॉर्टन एवं जीराल्ड आर. लेस्ली** के अनुसार, 'सामाजिक समस्या एक ऐसी स्थिति है जो अनेक व्यक्तियों को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करती है तथा जिसका हल समूह द्वारा सामूहिक क्रिया द्वारा निकाला जाता है।'
10. **रोबर्ट के. मर्टन एवं निस्बेत** के अनुसार, 'सामाजिक समस्या व्यवहार का एक ऐसा रूप है जिसे समाज का एक बड़ा भाग व्यापक रूप से स्वीकृत तथा अनुमोदित मानदण्डो का उल्लंघन मानता है।'

क्या आप जानते हैं?

- भूख भारत की 'सबसे बड़ी समस्या' है- दुनिया के सबसे बड़े खाद्य उत्पादकों में से एक देश लाखों को भूखा रखता है। भारत इन कृषि वस्तुओं के सबसे बड़े उत्पादकों में से एक हैं, फिर भी दुनिया के सबसे अधिक आबादी वाले देश में लाखों लोग अभी भी भूख से मर रहे हैं।

साम्प्रदायिकता के दुष्परिणाम

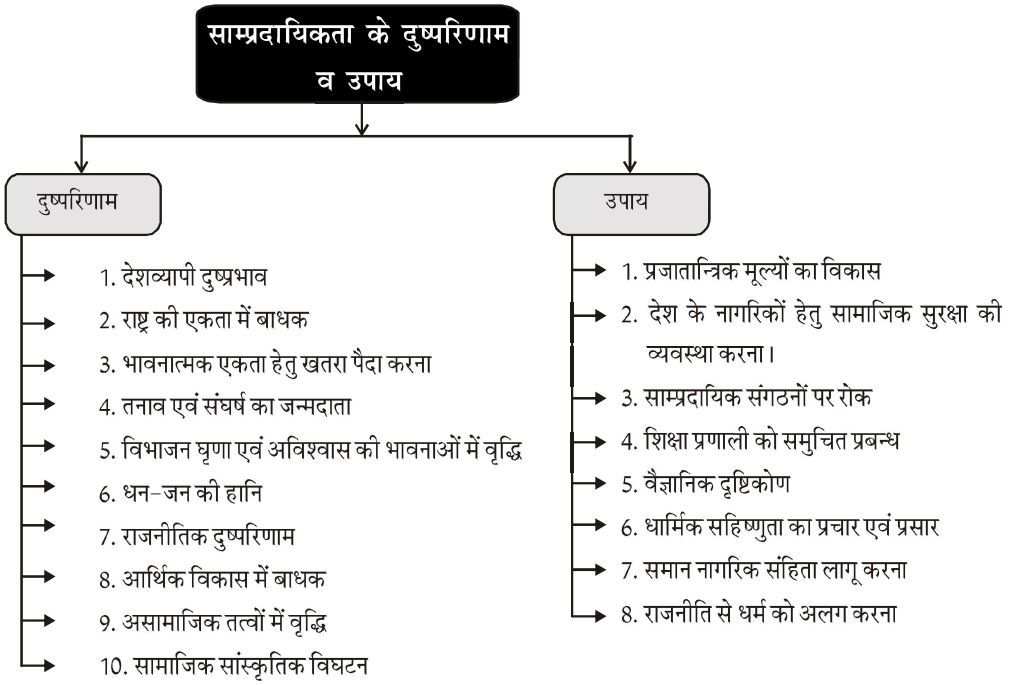

गरीबी

✦ गरीबी का अर्थ

- गरीबी वह स्थिति है जिसमें व्यक्ति अपनी न्यूनतम मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ होता है।
- गरीबी रेखा **विश्व में सर्वप्रथम 1945 विश्व खाद्य एवं कृषि संगठन** के **प्रथम महानिदेशक लार्ड बॉयड** ने प्रदर्शित किया है। इनके अनुसार उन लोगों की गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन वाला माना जायेगा। जो प्रतिदिन न्यूनतम 2300 कैलोरी ऊर्जा का उपभोग करते हैं।

✍ क्या आप जानते हैं?

- समाजशास्त्री हेनरी **बर्नस्टीन ने निर्धनता के चार आयाम** बताए हैं—
  1. जीविका रणनीतियों का अभाव
  2. संसाधनों (जैसे- धन, भूमि आदि) की अनुपलब्धता।
  3. असुरक्षा की भावना।
  4. संसाधनों के अभाव के कारण सामाजिक संबंध रखने और विकसित करने की अक्षमता।

✦ गरीबी की परिभाषाएँ

(1) **गिलिन व गिलिन** के अनुसार, 'गरीबी वह दशा है जिसमें कोई व्यक्ति कम आग अथवा बुद्धिहीन खर्वे के कारण अपने जीवन स्तर को अपनी शारीरिक तथा मानसिक कुशलता के योग्य रखने में असमर्थ रहता है तथा बा अपने स्वाभाविक आश्रितों को अपने समाज के स्तर के अनुकूल, जिसका कि वह सदस्य है, रखने में असमर्थ है।'

(2) **बीबर** के अनुसार, 'गरीबी एक ऐसे जीवन स्तर के रूप में परिभाषित की जा सकती है जिसमें स्वास्थ्य और शरीर सम्बन्धी दक्षता नहीं बनी रहती है।'

(3) **गोडार्ड** के अनुसार, 'गरीबी उन वस्तुओं का अभाव या अपर्याप्त पूर्ति है जो कि एक व्यक्ति तथा उसके आश्रितों को स्वस्थ बनाए रखने के लिए आवश्यक है।'

- उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट हो जाता है कि गरीबी व्यक्ति की वह स्थिति है जिसमें वह अपनी और अपने स्वाभाविक आश्रितों को जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं को भली-भाँति पूरा करने में असमर्थ है। इसका कारण धन का अभाव अथवा विवेकशून्य (बुद्धिमत्तारहित) व्यय हो सकता है। इसमें व्यक्तियों या समूहों के रहन सहन का स्तर इतना नीचा हो सकता है कि उसके स्वास्थ्य, मनोबल और आत्मसम्मान को क्षति पहुंचने की नौबत आ जाती है।

✍ क्या आप जानते हैं?

- 2024 के वैश्विक भूख सूचकांक के अनुसार, भारत का स्कोर 27.3 है, जो भूख के गंभीर स्तर को दर्शाता है। भारत के लिए जीएचआई स्कोर चार प्रमुख संकेतकों से प्राप्त होता है: 13.7 प्रतिशत आबादी कुपोषित है, पाँच साल से कम उम्र के 35.5 प्रतिशत बच्चे अविकसित हैं, इनमें 18.7 प्रतिशत बच्चे कमजोर हैं और 2.9 प्रतिशत बच्चे अपने पाँचवें जन्मदिन तक जीवित नहीं रह पाते हैं, जैसा कि रिपोर्ट में बताया गया है।

भारत में गरीबी के कारण

- गरीबी किसी एक विशेष कारण का परिणाम नहीं है अपितु इसके अनेक कारण हैं। भारत में गरीबी के निम्नलिखित प्रमुख कारण है-

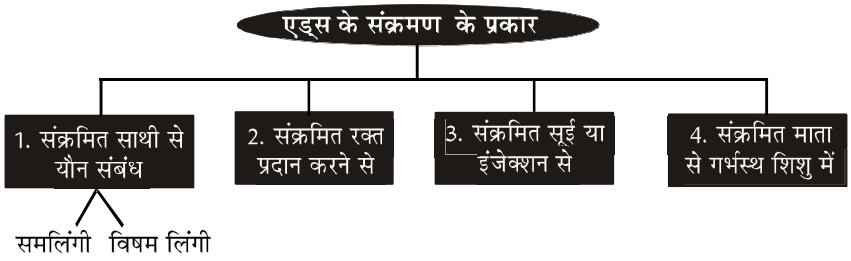

- अत्यन्त जोखिम वाले समूह उन व्यक्तियों का समूह है, जिनसे सम्पर्क से एड्स वायरस फैलने का खतरा या संक्रमण के संचरण की संभावना रहती है। जैसे—वैश्याएँ, समलैंगिक, नशेड़ी (इंजेक्शन द्वारा मादक पदार्थ लेना), रक्तदाता, संक्रमित गर्भवती महिलाएँ आदि।
- **असुरक्षित यौन संबंध**—भारत में सर्वाधिक संक्रमण इसी तरीके से (80%)
- **रीनी सेबेतियर**—ने इस वायरस की उत्पत्ति संबंधी तीन व्याख्याएं की
  1. पुरानी बीमारी जो ज्ञात नहीं थी।
  2. बंदर, लंगूर के वायरस से
  3. प्रयोगशाला में जानबूझकर निंमित किया गया।
- एड्स कोई मात्र स्वास्थ्य संबंधी समस्या नहीं है बल्कि यह सामाजिक समस्या है जिसके अनेक सामा., आर्थिक और सांस्कृतिक प्रभाव है। यह न केवल व्यक्तिगत क्षति है बल्कि इसके पारिवारिक व सामुदायिक खतरे भी है। आर्थिक रूप से भी हानिकारक परिणाम होते है। इसके प्रभाव को निम्नलिखित रूप से देखा जा सकता है—

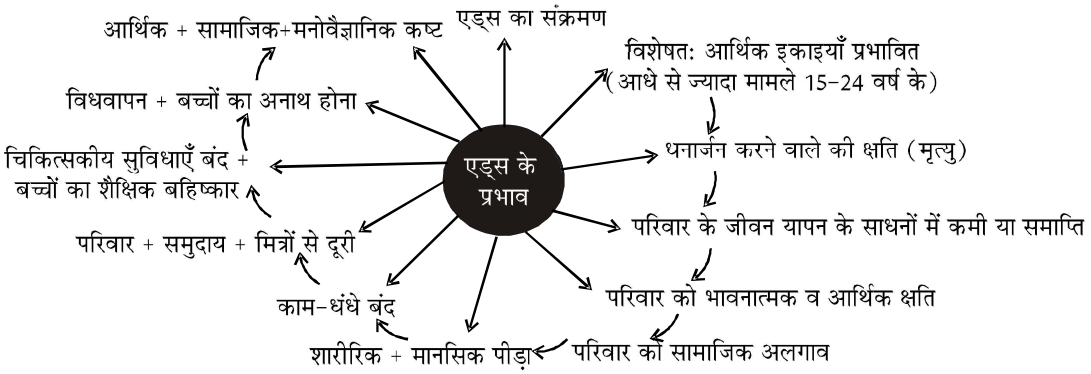

- **तीन प्रकार के एड्स परीक्षण—**
  1. एलिसा (ELISA)—सरल + अल्प समय में
  2. पश्चिमी ब्लॉट परीक्षण (Western Blot Test)
     - पहले परीक्षण को सत्यापित करने के लिए
     - महंगा + जटिल + दीर्घकालीन
  3. P.R.A. परीक्षण—अत्यन्त महंगी + भारत में परीक्षण उपलब्ध नहीं।

क्या आप जानते हैं?

- **ग्रेशस थॉमस** ने एड्स विकास की पाँच अवस्थाएँ बताई—
  1. इन्फ्लूऐन्जा की स्थिति
  2. बार-बार बुखार, पीसना व कमजोरी होना
  3. डायरिया जैसे लक्षण
  4. प्रतिरोधक क्षमता पूर्ण नष्ट होना
  5. मस्तिष्क की क्षति।

अभ्यास प्रश्न

1. ''जातिवाद राजनीतिकता में रूपांतरित एक जाति के प्रति निष्ठा है''—

(1) काका कालेलकर (2) के.एल. शर्मा
(3) नर्मदेश्वर प्रसाद (4) रजनी कोठारी
(5) अनुत्तरित प्रश्न (3)

2. 'पोलिटिक्स इन इंडिया' पुस्तक के लेखक है?

(1) रजनीकोठारी (2) दीपांकर गुप्ता
(3) राजीव गुप्ता (4) योगेन्द्र सिंह
(5) अनुत्तरित प्रश्न (1)

3. भारत में सांप्रदायिकता/ संप्रदायवाद (Communalism) का मुख्य आधार है?

(1) जाति (2) धर्म
(3) प्रजाति (4) भाषा
(5) अनुत्तरित प्रश्न (2)

4. वह प्रकरण जिसने स्वतंत्रोत्तर भारत में हिन्दू-मुस्लिम सांप्रदायिकता को बढ़ाया?

(1) ऑप्रेसन ब्ल्यूस्टार (2) आनंदपुर साहिब प्रस्ताव
(3) असहयोग आंदोलन (4) शाहबानो प्रकरण
(5) अनुत्तरित प्रश्न (4)

5 वर्ण, आश्रम, धर्म, पुरूषार्थ, विवाह और परिवार अवधारणा

वर्ण

वर्ण

उत्पत्ति → संस्कृत भाषा से
शब्द → 'वृ' (धातु)
अर्थ → वरण करना (चुनाव करना)

- वर्ण **'वृ'** धातु से बना शब्द है। इसका अर्थ होता है- वरण करना या चुनाव करना।
- वर्ण का शब्दिक अर्थ रंग होता है।

- हिन्दीवादी व्यवस्था में जातिय संगठन का मुख्य आधार वर्ण व्यवस्था है। वर्ण व्यवस्था का अभिप्राय चार अर्थों में लिया जाता है -
  1. ध्वनि
  2. रंग
  3. वर्ण/चयन
  4. वृद्धि/कार्य

क्या आप जानते हैं?
✦ हिन्दू धर्म के आधार पर वर्ण चार प्रकार के होते हैं जबकि बौद्ध धर्म के आधार पर वर्ण छः प्रकार के होते हैं।

वर्णों के प्रकार

वर्ण के प्रकार

कार्य विभाजन के अनुसार	ऋग्वेद (पुरूष सुक्त) के अनुसार	महाभारत के अनुसार	उपनिषद के अनुसार	गीता दर्शन के अनुसार
1. ब्राह्मण 2. क्षत्रिय 3. वैश्य 4. शुद्र	ब्रह्म के मुख से - ब्राह्मण भुजा से - क्षत्रिय जांघ से - वैश्य पैरा से - शुद्र	गुणों के आधार पर चार वर्ण बताये।	वृहदारण्यक उपनिषद में वर्ण के चार प्रकार बताये।	गुण व कर्म के आधार पर चार प्रकार बताये

1. कार्य विभाजन के आधार पर -

➢ कार्य विभाजन के आधार पर वर्णों के चार प्रकार बताये गये हैं-

कार्य विभाजन के आधार पर

ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शुद्र
यज्ञ, अनुष्ठान आदि	सुरक्षात्मक कार्य	व्यापार व उत्पादन	तीनों वर्गों की सेवा

ब्राह्मण वर्ग- ज्ञान को धारण करके
क्षत्रिय वर्ग - बल को धारण करके
वैश्य वर्ग - धन को धारण करके
शुद्र वर्ग - श्रम को धारण करके

5. **आर्थिक विकास में सहायक**—जैसा कि **वेबर** ने बताया कि कैथोलिक संप्रदाय की तुलना में **प्रौटेस्टेंड धर्म** में कुछ ऐसे तत्व, विचार या विश्वास, आचार होते हैं जो आर्थिक विकास या पूंजीवाद को प्रेरित करते है।
6. **सामाजिक परिवर्तन पर नियंत्रण**—परिवर्तन प्राकृतिक, अटल नियम है। लेकिन यह परिवर्तन व्यक्ति व समाज के लिए विघटनकारी न हो इसके लिए रूढ़िवादी प्रकृति के रूप में विचलित परिवर्तन या नकारात्मक परिवर्तन को नियंत्रित करता है।
7. **सामाजिक नियमों व नैतिकता की पुष्टि**—प्राय धार्मिक नियम नैतिक होते है। समाज के अलिखित नियमों को धार्मिक विचार या विश्वास से जोड़कर उन्हें सुदृढ़ता प्रदान की जाती है तथा वे अधिक प्रभावी हो जाते है।
8. **कर्त्तव्य का निर्धारण**—धर्म व्यक्ति को कर्म या कर्त्तव्य करने हेतु भी प्रेरित करता है **गीता** का संदेश—''**कर्म करो फल की चिंता मत करो**'' इसकी अभिव्यक्ति है।
9. **मनोरंजन**—त्योहारों, उत्सवों, संस्कारों आदि धार्मिक क्रियाओं के माध्यम से मानव जीवन में निरसता के स्थान पर मनोरंजन प्रदान करता है।
8. **पवित्रता की भावना को जन्म व बढ़ावा देना**—अलौकिक या आध्यात्मिक शक्ति को पवित्र मानते हुए उससे संबंधित सभी विचार, भावनाएं विश्वास व कर्मकांड भी पवित्र ही होते हैं। अत: यह समाज में स्वच्छता, शुद्धता को बढ़ाकर, प्रदूषण, गंदगी पर नियंत्रण लगाता है। तथा मानव जीवन को **पवित्र-अपवित्र** दो भागों में बांटता है।
11. **सदगुणों का विकास**—सत्य बोलना, परोपकार की भावना, दयालुता, सहिष्णुता आदि गुणों का विकास करता है।

धर्म उत्पत्ति के सिद्धांत

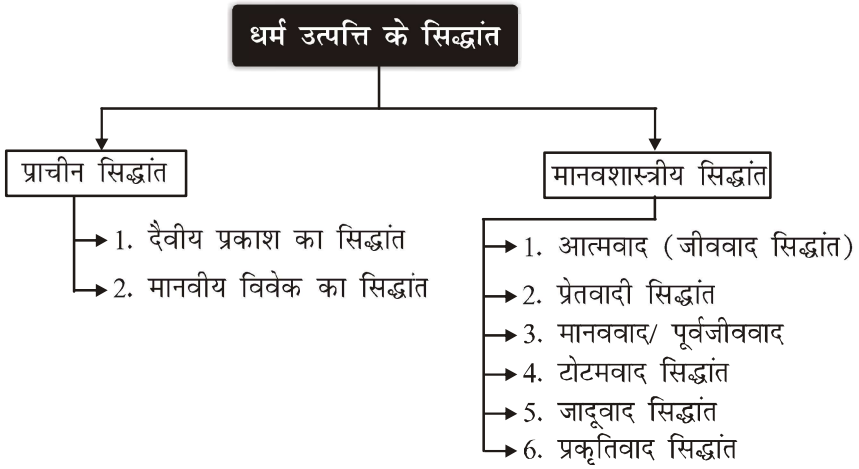

1. **आत्मवाद/जीववाद सिद्धांत:**

- **प्रतिपादक** - ई. बी. टायलर (1871)
- **टायलर** के अनुसार ऊपरी तौर पर तो सभी धर्म अलग-अलग दिखाई देते है परन्तु मूलत: वे एक ही विचार पर आधारित है, वह विचार है '**आत्मा**' या 'जीव' में विश्वास। आपने सभी धर्मों का आधार (आदिम समाज से लेकर सभ्य समाज) 'आत्मा' को माना। इसलिए इस सिद्धान्त को आत्मावाद/जीववाद के नाम से जाना जाता है। **हरबर्ट स्पेंसर** भी इसके समर्थक है।
- **आत्मावाद को दो भागों में बांटते हैं**—1. **शरीर आत्मा** व 2. **स्वतंत्र आत्मा** (1. आत्मा का सिद्धान्त, 2. प्रेतों का सिद्धान्त)। शरीर आत्मा सिद्धान्तानुसार **प्रत्येक मनुष्य** में **आत्माएं होती है** जो कि उसकी मृत्यु के बाद भी अमर रहती है। स्वतंत्र आत्मा सिद्धान्त के अनुसार **मनुष्य के अलावा प्रेतात्माएं या दैवीय आत्माएं** होती है।
- टायलर कहता है कि ''**धर्म आत्मा या आध्यात्मिक शक्ति में विश्वास है**'' यह अनुभव उसने नींद व मृत्यु जैसी घटनाओं से उत्पन्न हुआ।
- उसने सर्वप्रथम अपने पूर्वजों की आत्माओं का अनुभव किया और उनमें श्रद्धा व भय के कारण उनकी **(पूर्वजों की)** पूजा प्रारंभ की। उसके बाद **बहुदेववाद** आदि से होते हुए आधुनिक धर्म **एकदेववाद** का विकास हुआ। जिसके अनुसार एक महान आत्मा या विश्वात्मा (Amima Mundi or world soul) पूरी दुनिया को संचालित करती है।
- **टायलर** के अनुसार, ''**आत्मा एक पतली, निराकार, मानव प्रतिमूर्ति, आकृति में कोहरा, चलचित्र या छाया की भाँति है।**''

2. **प्रेतवाद का सिद्धांत:**

- **प्रतिपादक** - हर्बट स्पेन्सर
- इस सिद्धांत के अनुसार धर्म की उत्पत्ति प्रेतवाद जैसी क्रियाओं के कारण हुई है।

3. मानववाद/पूर्ववाद/मानावाद सिद्धांत:

- प्रतिपादक - मैक्स मूलर प्रीउस
- इस सिद्धान्त की मान्यता है कि **प्रत्येक वस्तु चाहे व जड़ हो या चेतन उसमें जीवित सत्ता होती है जो कि अलौकिक होती है।** इस सत्ता में विश्वास व उसकी पूजा-अराधना से ही धर्म की उत्पत्ति हुई।

6. **सदस्यों का उत्तरदायित्वः** परिवार के सभी सदस्यों के उत्तरदायित्व बंधे एवं बटे हुये होते है। सभी सदस्य अपने-अपने हिस्से का कार्य सुगमता पूर्वक करते है। सदस्यों के बीच अपने उत्तरदायित्व को लेकर कोई भी विवाद नहीं होता है। सदस्यों का यह उत्तरदायित्व ही परिवार को और भी अधिक मजबूत बनाता है तथा बड़ो छोटो में कार्य का विभाजन भी करता है।
7. **सामाजिक नियंत्रण का प्रभावी स्थानः** परिवार की यह विशेषता परिवार रूपी संस्था को अक्षुण्य रखती है। परिवार का कोई सदस्य यदि अपने उत्तरदायित्व को नहीं निभा पा रहा हो या परिवार के द्वारा स्थापित नियमों को उल्लघंन कर रहा हो तो परिवार उसे अपने तरीके से नियंत्रित करती है। जिससे व्यवस्था कायम रहें और समाज में किसी प्रकार का कोई संकट न आये। यदि परिवार अपने सदस्यों पर नियंत्रण रखती है तो समाज एवं समुदाय में किसी प्रकार की हिंसा या मतभेद नहीं होंगें। यह कार्य परिवार के द्वारा किया जाता है। प्रत्येक परिवार के नियंत्रण करने का रूप अलग-अलग होता है।
8. **रक्त संबंधों का बंधनः** परिवार रक्त संबंधों में बंधा होता है। वंश वृक्ष की शुरूआत परिवार से ही होती है परिवार में जीतने भी सदस्य होते है। वे सभी एक ही पुर्वज माने जाते है। और यही कारण है कि परिवार में अपनत्व भी अधिक होती है। कहीं न कहीं यह रक्त बंधन समाज में आत्मिक रूप से स्वीकार की गई होती है।
9. **सामाजिकरणः** परिवार की यह विशेषता परिवार में जन्में बालक को मानव तुल्य बनाती है। प्रत्येक परिवार अपनी परम्पराओं और रीति-रिवाजों एवं प्रथाओं को आने वाली पीढ़ी को सिखाती है और बालक इसे अनुकरण के द्वारा सीखता है। यही समाजिकरण कहलाता है। समाज के विभिन्न अभिकरणों की भूमिका सामाजिकरण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण होती है और बालक अपने परिवार के अनुरूप व्यवहार करता है।
10. **आर्थिक व्यवस्थाः** प्रत्येक परिवार अपने परिवार को सुचारू रूप से चलाने के लिए विभिन्न कार्य करके आय अर्जन करता है। एक प्रकार से कहें तो परिवार अपने सदस्यों को आर्थिक सुरक्षा प्रदान कर आवश्यकताओं की पूर्ति करता है और आगे भी अपने बच्चों के लिए आर्थिक व्यवस्था करता है। जिससे वे उनका लाभ लेकर अपनी अर्थव्यवस्था को स्थापित कर सके।

- इस प्रकार से परिवार नामक का संस्था वर्णन इस अध्याय में किया गया है। जिसमें हमने देखा कि परिवार ही मानव के अस्तित्व को बनाये रखने के लिए निरंतर प्रयासरत रहती है। परिवार के विभिन्न कार्यों को स्पष्ट कर यह बताया गया है कि परिवार विभिन्न कार्यों के द्वारा अपने सदस्यों को सुरक्षा एवं संरक्षण देती है। मानव को मानव होने के उद्देश्यों से परिचित कराती है। एक आदर्श नागरिक होने के नाते व्यक्ति के क्या-क्या दायित्व है उसे बताती है। इस अध्याय में परिवार के प्रकारों का भी वर्णन किया गया है विभिन्न प्रकारों में संख्या के आधार पर परिवार के दो प्रकारों को भारत में आजतक अपनाया गया है। संयुक्त परिवार तथा एकाकी परिवार। संयुक्त परिवार के बहुत से गुण है तो दोष भी है।

परिवार के कार्य